FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:14 PM Page 1

VOLUME 3 ISSUE 18 FEBUARY 2018

तीखी मिर्च

TEEKHI MIRCH

INDIA'S FIRST NATIONAL MONTHLY BILINGUAL CARTOON MAGAZINE ₹ 25

कलम और कौशल करें जिंदगी रोशन

"युवाओं के स्वाभाविक कौशल और ऊर्जा का सही इस्तेमाल देश व प्रदेश को नई दिशा देता है। राज्य सरकार ने प्रदेश के युवाओं के कौशल प्रशिक्षण हेतु हरियाणा कौशल विकास मिशन शुरू किया है, ताकि उन्हें तकनीकी रूप से प्रशिक्षित करके सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाया जा सके।"

मनोहर लाल, मुख्यमन्त्री, हरियाणा

हरियाणा कौशल विकास मिशन की योजनाएं

- 'सूर्य (SURYA)" (Skilling, Up-skilling, Re-skilling of Youth & Assessment) के तहत युवाओं को कौशल प्रशिक्षण।
- 'दक्ष (DAKSH)" (Dissemination of Applied Knowledge and Skill in Haryana) अन्य विभागों की कौशल स्कीम के तहत युवाओं को कौशल प्रशिक्षण।
- 'स्मार्ट (SMart)" (Skill Mart):- उद्योगों हेतु अपेक्षित मानव शक्ति को प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- 'सीखो-सिखाओ (Seekho-Sikhao)":- (Training of Trainers) के तहत कौशल प्रशिक्षकों एवं युवाओं को प्रशिक्षक बनने का प्रशिक्षण।

मिशन के तहत युवाओं को कौशल प्रशिक्षण

- युवाओं को परिधान, वस्त्र, सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, ऑटोमोटिव, रिटेल, बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएं तथा बीमा (बी.एफ.एस.आई.), लॉजिस्टिक, इलैक्ट्रॉनिक्स, निर्माण, प्लास्टिक विनिर्माण एवं प्रौद्योगिकी आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में राजकीय संस्थानों तथा एन. एस.डी.सी. सूचीबद्ध प्रशिक्षण प्रदात्ताओं के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- वर्ष 2015-16 और 2016-17 के दौरान 20,000 लोगों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए केन्द्रीय कपड़ा मंत्रालय की समेकित कौशल विकास योजना के तहत सफल प्रशिक्षण उपरान्त 1000 रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
- एन.एस.डी.सी. के सूचीबद्ध प्रशिक्षण प्रदात्ताओं द्वारा अम्बाला, रोहतक, हिसार, गुरुग्राम, भिवानी, पानीपत और फरीदाबाद में 25 प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित।
- केन्द्रीय प्लास्टिक इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.पी. ई.टी.), मुरथल (सोनीपत) के माध्यम से 360 युवाओं के लिए प्लास्टिक इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण शुरू।
- वर्तमान में 16 राजकीय/सरकारी सहायता प्राप्त बहुतकनीकी संस्थानों द्वारा 7900 प्रशिक्षुओं को विभिन्न ट्रेड्स में 3 से 6 मास का अल्पावधि मॉडयूलर कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इनमें हरियाणा की 15 जेलों में स्थापित कौशल केन्द्र भी शामिल हैं।

तकनीकी शिक्षा क्षेत्र में नई पहल

- हरियाणा राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध सभी पॉलीटेक्निक डिप्लोमा, उच्चतर शिक्षा के लिए 10+2 के समकक्ष।
- सभी बहुतकनीकी संस्थान विभिन्न क्षेत्रों में अल्पावधि कौशल विकास कोर्स करवाएंगे।
- नियमित डिप्लोमा कोर्स के साथ सॉफ्ट स्किल्स एवं लाइफ स्किल्स शुरू।
- डिप्लोमा विद्यार्थियों के लिए एन.सी.सी./एन.एस.एस./सेंट जोन एम्बुलेंस प्रशिक्षण/योग/संगीत/जेंडर सेन्सेटाइज़ेशन/सेल्फ डिफेन्स कार्यक्रम शुरू।
- राज्य के सभी बहुतकनीकी एवं इंजीनियरिंग कॉलेजों में 100 युवा प्रति संस्थान/प्रति वर्ष को प्रशिक्षण देने के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (अभातशिप) द्वारा पोषित प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना लागू की जा रही है।
- जिला पलवल में विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है।

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:14 PM Page 3

PUBLISHER & EDITOR-IN-CHIEF
Arti Jain

ADVISORY BOARD
A N Mishra
Ashok Chakradhar
Laxmi Shankar Bajpai
Abhay Kumar Dubey
Vijay Trivedi
Tehseen Munawer
Narendra Kumar Verma

CARTOONISTS ON BOARD
E P Unny, The Indian Express
Rajendra Dhodapkar, Dainik Hindustan
Surendra, The Hindu
Irfan Khan,
Subhani, Daccan Chronicle
R Prasad, Outlook
Chandrashekhar Hada, Dainik Bhaskar
Abhishek Tiwari, Patrika Group
Hariom Tiwari, Dainik Bhaskar
Sandeep Joshi, Tribune
Kirtish Bhatt,BBC Hindi
Sajith Kumar,Outlook
Rajesh Dubey, cartoon leela, Jabalpur
Pawan, Dainik Hindustan, Patna
Mansoor Naqvi,DB Post

DESIGN & PRODUCTION
Anita Singh
Reena Sharma

CREATIVE DIRECTOR
Apurv Jain

MARKETING
Pramod Jain

LEGAL ADVISORS
Ashwani Kumar Dubey
(Advocate-on-Record, Supreme Court of India)
Dinesh Rai Dwivedi

CORRESPONDENCE ADDRESS
208 Sahyog Apartment, Mayur Vihar-1, New Delhi-110091
Editor, Owner, Printer & Publisher: Arti
Published from 208 Sahyog Apartment, Mayur Vihar-1,
New Delhi-110091.
Printed at Char Dishayen, G39, Sector 3, Noida (U.P)
www.teekheemirch.com
contact.teekhimirch@gmail.com

Contact-9810287419

Cover cartoon by Irfan

The courts at Delhi shall have exclusive jurisdiction in the event of any dispute arising due to the content published in this magazine.

Content

Cartoon Feature.....06
Cartoon Express.....08
Gol Gappe.....45
Vyangya.....46

Global Voice.....48
Vyangya.....54
Youngistan.....57
Choti Mirch.....58

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:14 PM Page 4

'तीखी मिर्च' कार्यालय की ओर से सभी सब स्क्राइबरों को पत्रिका हर माह की 9 और 10 तारीख को बुकपोस्ट द्वारा भेजी जाती है।
अगर किसी सबस्क्राइबर को डाक-विभाग की वजह से यह पत्रिका नहीं मिल पाती है तो उसकी जिम्मेदारी 'तीखी मिर्च' कार्यालय की नहीं होगी।

'तीखी मिर्च' बिना स्वाद अधूरा

'तीखी मिर्च' के अंक से मुलाकात न होना खलता है। यूँ तो यह पत्रिका समय पर मिल जाती है। लेकिन जब कभी नहीं मिलती है तो बेचैनी बढ़ जाती है। क्योंकि 'तीखी मिर्च' जैसी देश में शायद ही कोई पत्रिका है,जो ज्ञानवर्धक के साथ मनोरंजक भी हो । संपादक महोदया को बहुत-बहुत धन्यवाद

अशोक ठाकुर
गुरुग्राम

हंसने को मजबूर

'तीखी मिर्च' का अंक मिला। हर बार की तरह घर में आते ही छीना-झपटी शुरू हो गयी। किसी तरह काफी देर बाद मेरा नंबर आया। एक नजर डालते ही बस फिर तो हंसने का सिलसिला शुरू हुआ सो हुआ । एक से बढ़कर एक सामग्री चाहे वह सम्पादकीय हो, 'ग्लोबलवॉईस' हो, या व्यंग्य ,सभी लाजवाब। खासकर 'कंट्रोवर्सी सम्बंधित कार्टूनों ने तो पेट पकड़कर हंसने को मजबूर कर दिया। आप हमें ऐसी ही सामग्री देकर हंसाते रहें और हमारा ज्ञानवर्धन करते रहें,ऐसी आशा है।

शालिनी माथुर
नई दिल्ली

इस अंक के लिए पाठकों की प्रतिक्रियाएं और सुझाव आमंत्रित हैं।
हमारा पता हैं :
208, Sahyog Apartment, Mayur Vihar-1, New Delhi-110091
आप ई-मेल भी कर सकते हैं :
contact.teekhimirch@gmail.com

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:14 PM Page 5

अकरम रसलान सीरियन कार्टूनिस्ट था,जिसने सीरियाई सरकार और प्रेसीडेंट बशर अल-असद के खूनी शासन के खिलाफ तीन सौ से भी ज्यादा कार्टून बनाये। 2 अक्टूबर 2012 में उसे शासन के खिलाफ इस तरह बोलने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में उसे इतनी यातना दे गयी कि वह सहन नहीं कर पाया और 38 साल की उम्र में इस युवा कार्टूनिस्ट ने आखिरकार दम तोड़ दिया लेकिन उसकी मौत की खबर को सीरियाई सरकार ने दबाकर रखा किसी तरह सितम्बर 2015 में जाकर रसलान के परिवार वालों को यह खबर मिल पायी कि रसलान अब इस दुनिया में नहीं है। हालांकि इस दर्दनाक मौत से जुडी और तमाम बातें अभी भी रहस्य के परदे में ही छुपी हुई हैं। दुनिया के तमाम कार्टूनिस्टों ,लेखकों और रचनाकारों ने इस जुल्म के खिलाफ अपनी आवाज उठाई और अभिव्यक्ति कि स्वतंत्रता को इस तरह कुचलने की सीरियाई शासन की इस क्रूर कवायद के खिलाफ अपने-अपने तरीके से विरोध दर्ज किया।

बोलने की आजादी पर जब कहीं भी इस तरह के हमले हुए हैं या किसी भी तरह की धार्मिक असहिष्णुता ने सर उठाया है, दुनिया भर की लेखक बिरादरी और रचनाधर्मी लोगों ने इसी तरह एकजुटता दिखाई है। यही वजह है कि हाल ही में दादरी काण्ड के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुप्पी के विरोध में जब नामी शाहित्यकारों ने अपने-अपने साहित्य अकादमी अवार्ड लौटाने शुरू किये तो जहाँ एक वर्ग ने इसे सरकार के प्रत्ति विद्रोह,सरकार का अपमान और देशद्रोह तक बताने की कोशिश की ,वही देश के एक बहुत बड़े तबके का व्यापक समर्थन इस तथाकथित आंदोलन को बराबर मिलता रहा। विश्व भर में जब कभी इस तरह की दमनकारी घटनाएँ होती हैं तो सबसे पहली आवाज इन्ही साहित्यकारों ,कलाकारों की बिरादरी से ही उठती है क्यूंकि ये समाज के लाउड स्पीकर होते हैं । इन आवाजों को दबाने की कितनी भी कोशिश की जाये। लेकिन ये कोई न कोई संध ढूंढ ही लेती हैं और इतनी बुलंद हो जाती हैं कि सत्ता के नशे में बहरे हो चुके शासन तंत्र को न चाहते हुए भी इन्हें सुनने के लिए मजबूर होना पड़ता हैं।

Arti

संपादक

TEEKHI MIRCH

The views expressed here are solely those of the author and/or cartoonist in his private capacity and do not in any way represent the views of Teekhi Mirch.-Editor

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:14 PM Page 6

बरसो राम धड़ाके से !!

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 7

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 8

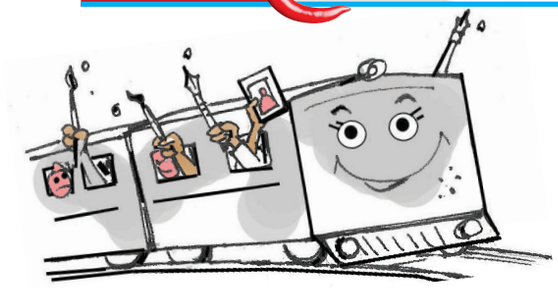

cartoon express

Courtesy : Social Media

भैंस पहाड़ के नीचे !!

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की मुसीबतें दिन ब दिन बढ़ती जा रही हैं। चारा घोटाले की तलवार तो सर पर लटक ही रही है, अब प्रवर्तन निदेशालय ने लालू सहित पूरे परिवार पर आय से अधिक संपत्ति और बेनामी संपत्ति रखने के आरोप में अपना शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। रही सही कसर मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने राजद के साथ गठबंधन तोड़ कर उसे सरकार से बाहर का रास्ता दिखा कर पूरी कर दी। हालात यहां तक खराब हो चुके हैं कि एअरपोर्ट पर आमतौर पर सभी विशिष्ट लोगों को मिलने वाले विशेषाधिकारों से भी लालू यादव और राबड़ी देवी को महरूम कर दिया गया है। घोटालों में बुरी तरह फंस चुके लालू को अब क्या-क्या दिन देखने पड़ेंगे ये अभी भविष्य की गर्त में है।

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 9

Courtesy :DB Post

Courtesy : Dainik Bhaskar

Courtesy : Social Media

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 10

I fear arrest. They have one star hotel, 2 houses, some cash in my name too!

Courtesy : Deccan Chronicle

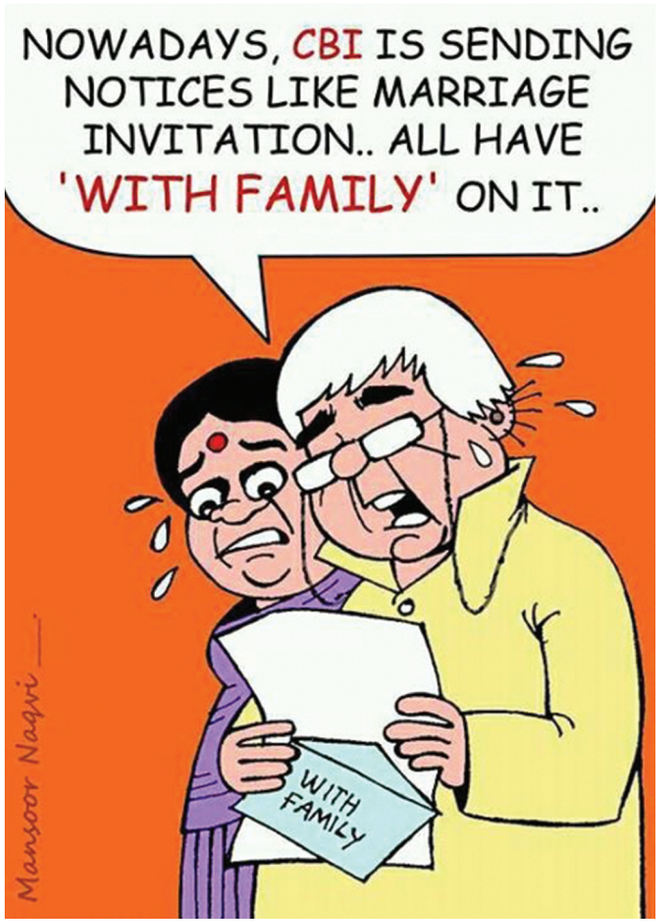

Courtesy :DB Post

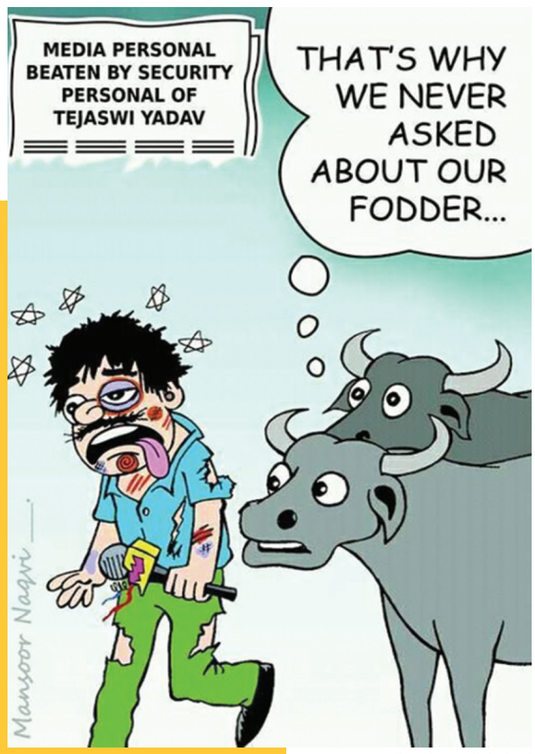

Courtesy :DB Post

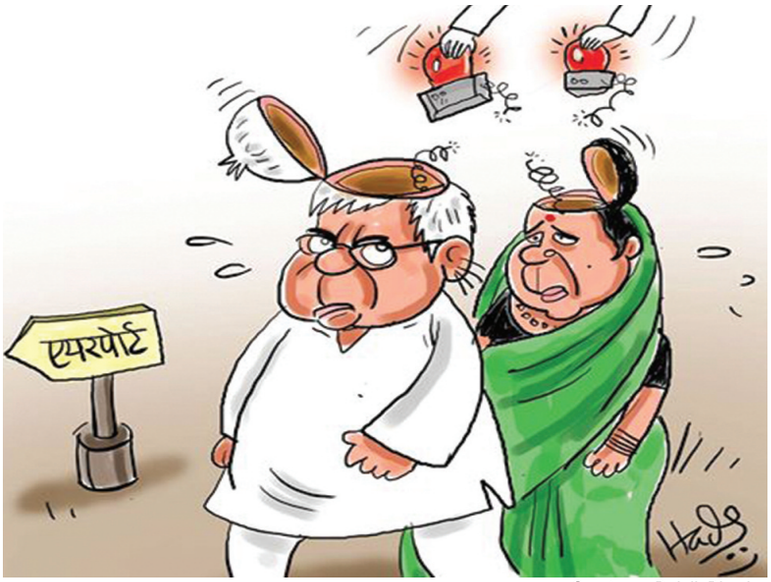

Courtesy : Dainik Bhaskar

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 11

Hello, Mr Sharif. It's unfair. What's wrong if we earn a few crores for our families?

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : Social Media

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 12

फिर अच्छे दिन !!!!

नोटबंदी के बाद जीएसटी लागू करके प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने जता दिया कि वे जिन इरादों को लेकर इस कुर्सी पर बैठे थे उन्हें पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। मनमोहन सरकार में जिस कांग्रेस ने सबसे पहले जीएसटी लगाने का प्रस्ताव पेश किया था वही जोर शोर से इसका विरोध कर रही है। उसका कहना है कि ये वो जीएसटी नहीं है जो वो लागू करना चाहती थी। हांलांकि तब भाजपा का कहना था कि जीएसटी की वजह से छोटे दुकानदार और व्यापारियों का एक बड़ा तबका बरबाद हो जायेगा लेकिन आज वो जीएसटी का गुणगान करते नहीं थक रही है । आने वाले दिनों में इसका कितना फायदा देश को मिलेगा अभी कहा नहीं जा सकता पर फिलहाल नोटबंदी के झटके से धीरे-धीरे उबर रहा बाजार चारों खाने चित्त पड़ा हुआ है। अफरा-तफरी का माहौल है। न अधिकारी इसके बारे में पूरी तरह समझा पा रहे हैं और न ही व्यापारी इसकी जटिलताओं को पूरी तरह समझ पा रहे हैं।

Courtesy : DB Post

Courtesy : Dainik Bhaskar

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 13

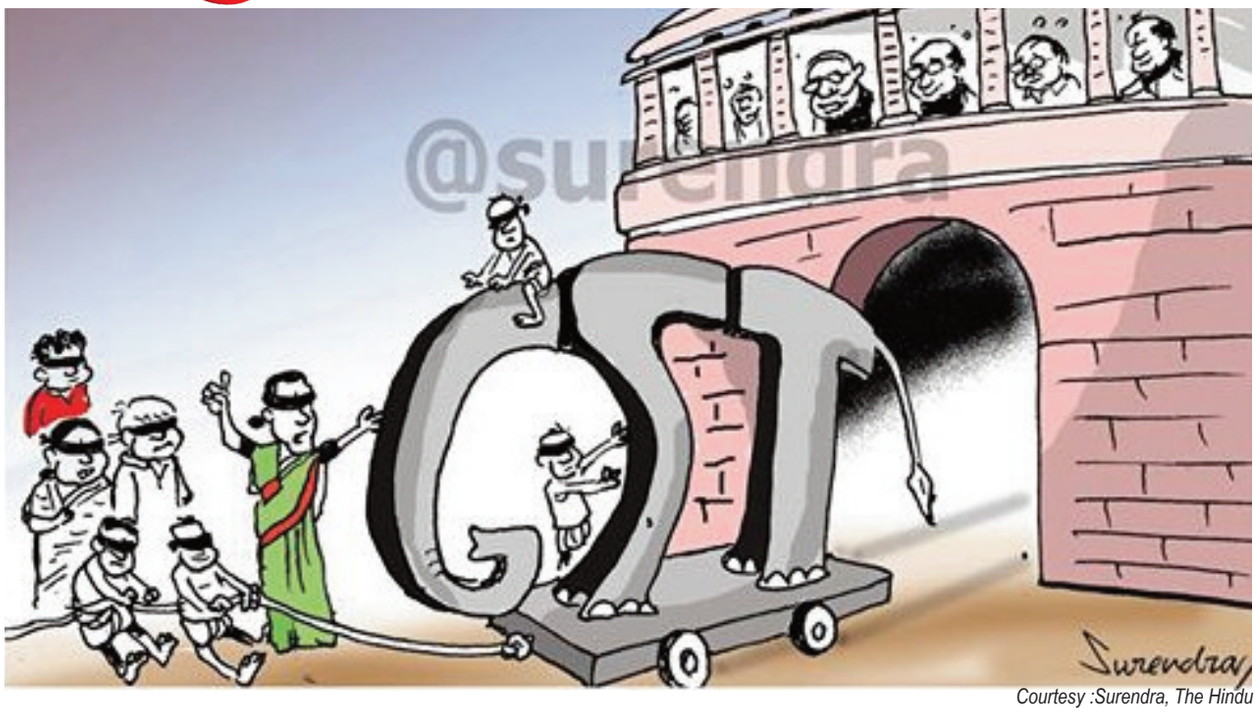

Courtesy :Surendra, The Hindu

Courtesy : Social Media

Courtesy : Dainik Bhaskar

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 14

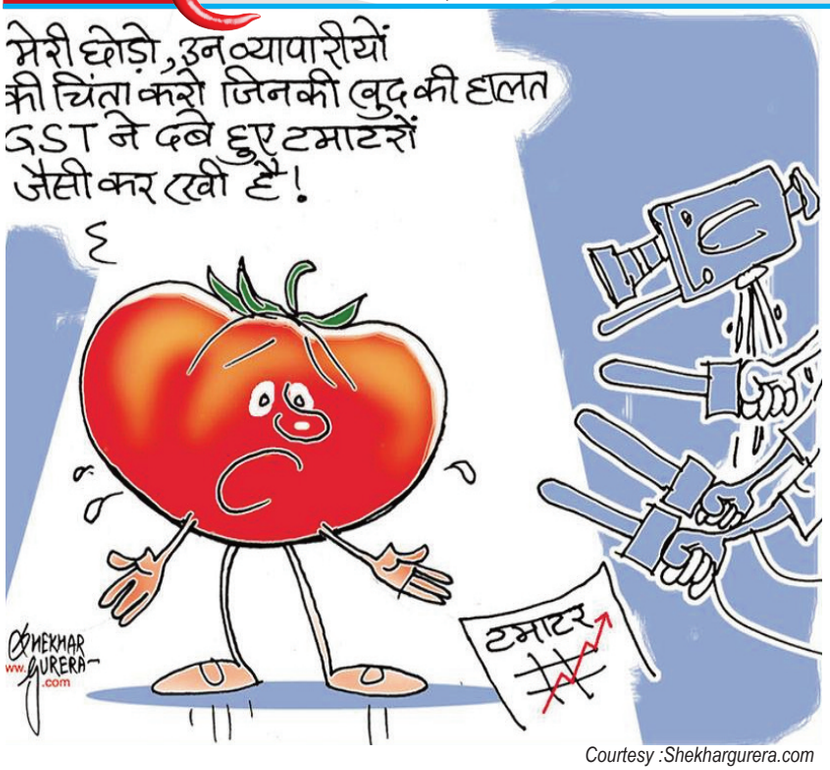

Courtesy :Shekhargurera.com

Courtesy : DB Post

Not demands... that are the things they want to be exempted from GST!

Courtesy : Deccan Chronicle

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 15

Courtesy : DB Post

Courtesy : Dainik Bhaskar

Courtesy : sify.com

... इस बार तो 'कुछ दिन की परेशानी' कह कर ही काम चला लिया, झूठ-मूठ ही सही, पचास दिन जैसी कोई समय सीमा तो दे ही देनी चाहिए थी।

Courtesy :Shekhargurera.com

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 16

I bought only those items that are 0% and less than 5% as per GST!

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy :Social Media

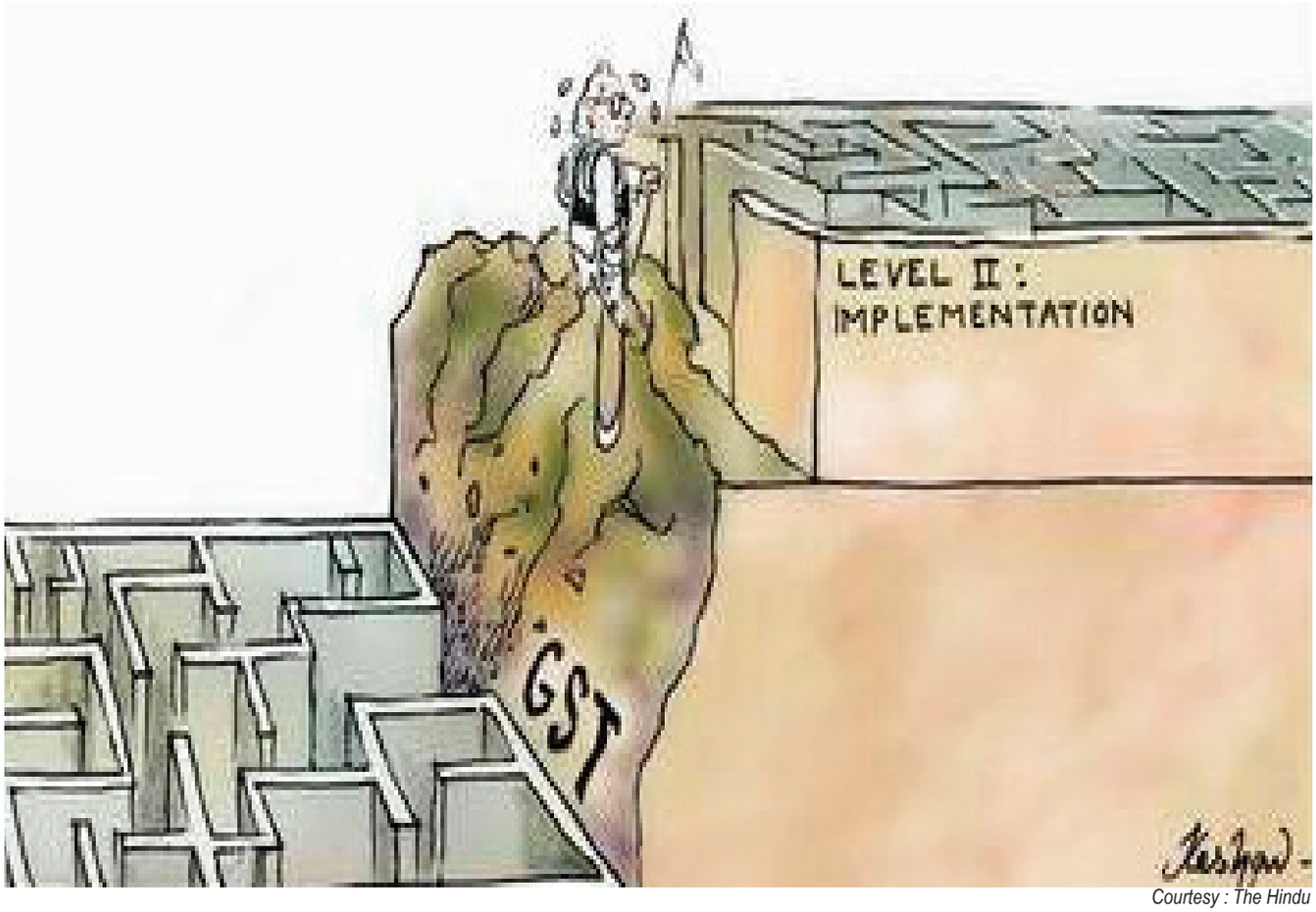

Courtesy : The Hindu

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 17

How much GST on the items available in Parliament canteen?

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Social Media

Courtesy : Patrika

Courtesy : Social Media

हाँ यार! बहुत कन्फ्यूजन हो गया है, मै तो अब परोडक्ट्स के रेट नही बल्कि GST रेट पूछ कर ही शॉपिंग करने लगी हूं!

Courtesy :Shekhargurera.com

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 18

Courtesy : Social Media

100% rise in all items.. it's normal price rise not due to GST!

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Sify.com

Courtesy : BBC,Hindi

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 19

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC,Hindi

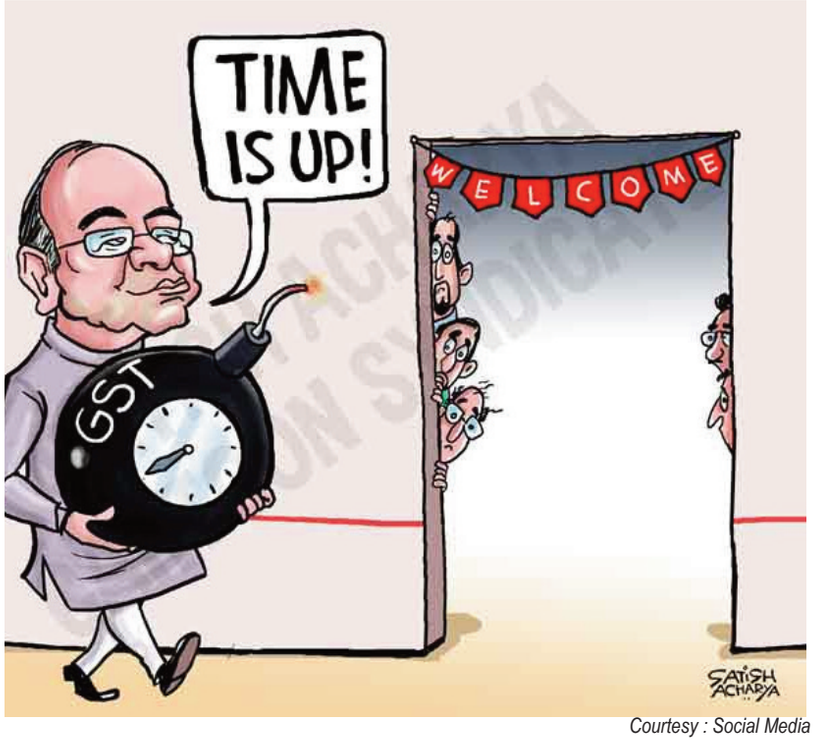

Courtesy : Social Media

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 20

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC,Hindi

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 21

गिनती चालु आहे !!

किसानों की आत्महत्याओं का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है। देश के अलग-अलग हिस्सों से रोजाना किसी न किसी किसान द्वारा आत्महत्या करने की खबर आना आम बात हो चली है। तमाम राज्य सरकारें यह दिखावा जरूर कर रही हैं कि वो किसानों के हित में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रख रही हैं लेकिन हकीकत में किसानों के हाथ कुछ नहीं आ रहा है । कर्ज के बोझ से परेशान उन्हें मरने के अलावा कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है । भगवान के अलावा उनकी मुश्किलें कौन कम करेगा इसका इंतजार है।

Courtesy : TOI

Courtesy : Social Media

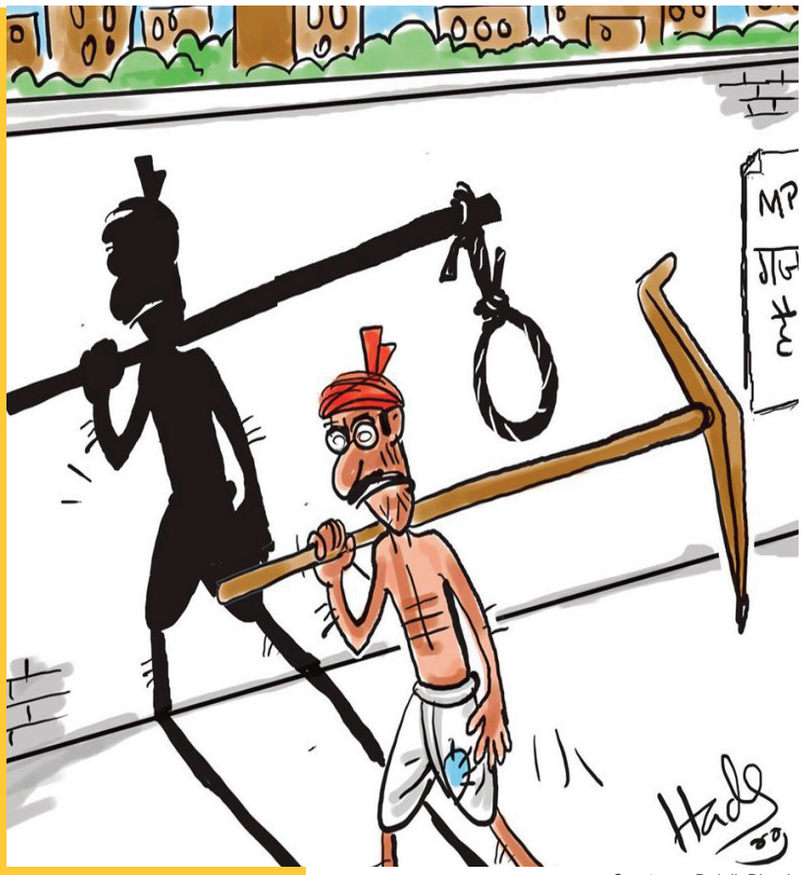

Courtesy.:.Dainik.Bhaskar

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 22

Courtesy : DB Post

Loan waiver only for farmers who are not rich, do not have tractors, bullocks, ploughs, land...

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : TOI

Courtesy : BBC Hindi

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 23

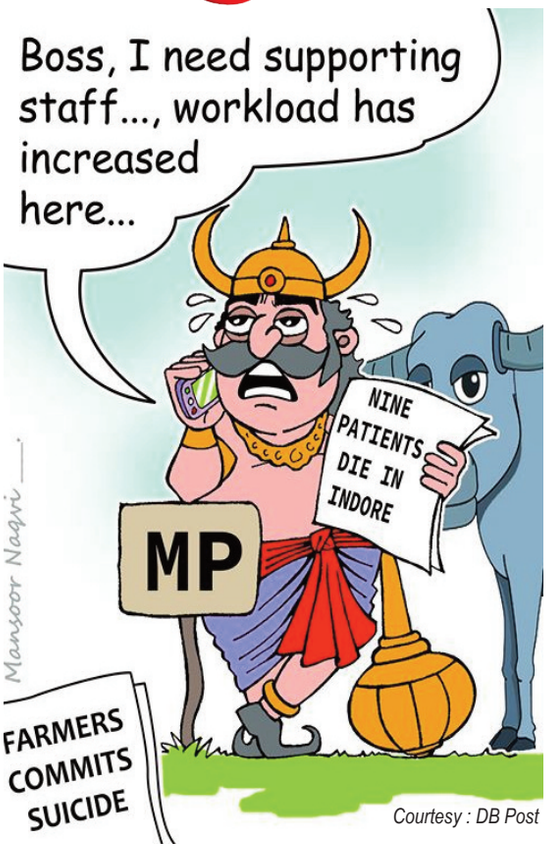

Courtesy : DB Post

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : BBC,Hindi

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 24

नॉट इन माई नेम !!

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने भाषणों और बातचीत में कई बार चेता चुके हैं कि गौरक्षा के नाम पर किसी भी किस्म की हिंसा कतई बर्दाश्त नहीं की जायेगी लेकिन ऐसा लगता है कि गौरक्षकों ने इस चेतावनी कोअनसुना करने का संकल्प ले रखा है। गायों को इधर से उधर ले जाते वक्त गौ पशुपालकों के साथ मारपीट की इतनी घटनाएं हो चुकी हैं कि लोग अब गाय खरीदने - बेचने से ही कतराने लगे हैं । सारे कागजात होने के बावजूद इन तथाकथित गौ रक्षकों के हाथों बच पाना नामुमकिन होता है। दिनोंदिन बढ़ती जा रही इन घटनाओं से गौमाता का कितना भला हो रहा है ये तो जग जाहिर ही है लेकिन देश का यकीनन बहुत बुरा हो रहा है।

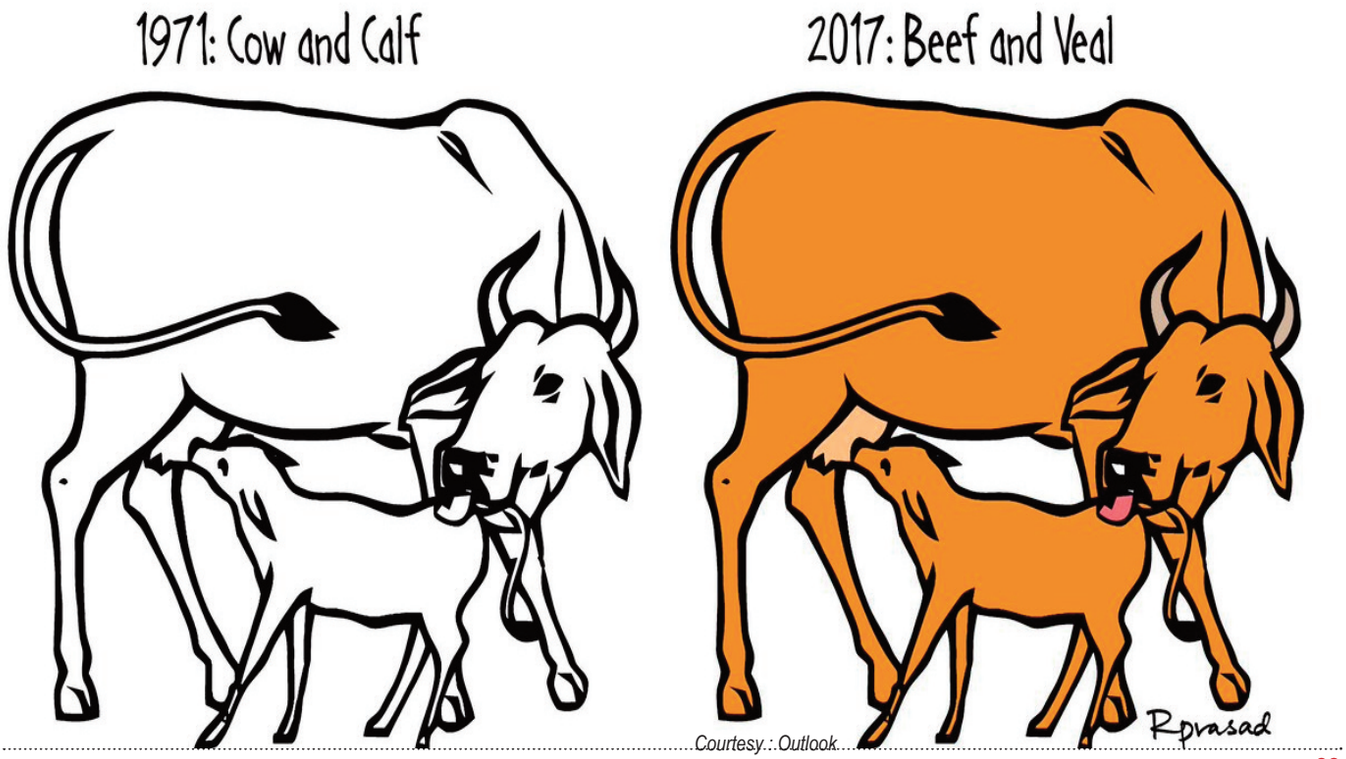

Courtesy : Outlook

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 25

Courtesy : TOI

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : Social Media

Courtesy : Surendra,The Hindu

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 26

Courtesy : TOI

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : BBC,Hindi

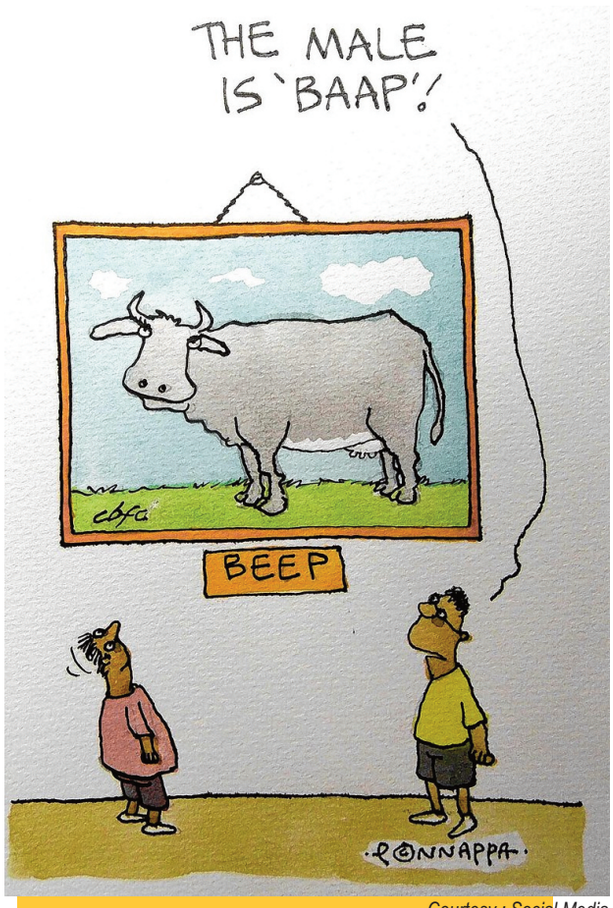

Courtesy : Social Media

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 27

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : Economic Times

Courtesy : BBC,Hindi

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 28

चीन भाई नहीं है !

चीनी भभकियों का दौर जारी है। हांलांकि पिछली सरकारों की तरह इस बार मोदी सरकार चुप नहीं रही और चीन की हर धमकी का तुर्की ब तुर्की जवाब दिया है। दोनों देशों के सेना के जवान भले ही आपस में न भिड़े हों लेकिन दोनों देशों के मीडिया में जबानी जंग रोज तेज होती जा रही है । ये जरूर है कि पाकिस्तान की तरह ही चीन के साथ होने वाले व्यापार पर इस सबका कोई असर नहीं पड़ रहा है और वो बदस्तूर जोरशोर से चालू है।

Courtesy : Social Media

Courtesy : TOI

Courtesy : TOI

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 29

No need to panic, sir. Their guns have been fitted with fake spares supplied by us!

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Social Media

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 30

GST इन देवलोक

देवराज इंद्र आज बहुत दुखी थे, इतने स्वर्ग में अचानक ''नारायण नारायण'' स्वर गूँजा..... सामने देखा तो नारद जी खड़े थे, ...नारद जी इंद्र को देखते ही समझ गए कि आज कुछ सीरियस मैटर है शायद उर्वशी ओर मेनका को कोई राक्षस मिस कॉल मार कर परेशान कर रहा है।

देवर्षि को देख इन्द्र को थोड़ा चैन आया उन्हें लगा कि उनकी समस्या का अब समाधान मिल जाएगा.....

कहो देवराज आज कदाचित बड़े दुखी जान पड़ते हो,नारद बोले.....

इन्द्र को जरा सा सहारा मिला तो फूट पड़े .....देवर्षि, अब मै आपसे क्या कहूँ, आप तो तीनो लोक में भ्रमण करते आये हैं, ये जम्बूद्वीप द्वीप में बड़ी समस्या चल रही है प्रभो,.....

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 31

क्या कह रहे हो देवराज ,.....अपने स्वर को धीमा करते हुए देवर्षि बोले .....ओर जरा धीरे बोलो अपने आसपास देखते हुए बोलो कही भक्तो को पता चल गया तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी, ...

देवराज इन्द्र बोले भक्तों को, भक्तों को इस बात से क्या समस्या हो सकती है.....

तुम नही समझोगे, चलो बैकुंठ लोक चलते है वही विष्णु जी से अपनी समस्या कहते है नारद बोले.....

इतना कह कर दोनों बैकुंठ लोक की ओर प्रस्थान कर गए.....

विष्णु भगवान हमेशा की तरह क्षीरसागर में शेषनाग पर लेटे हुए थे पर वह भी बार बार करवटे बदल रहे थे।

'नारायण नारायण' क्या बात है प्रभो क्या बिजली फिर चली गयी .....

आओ देवर्षि..... विष्णु भगवान फीकी सी मुस्कान बिखरते हुए बोले पर मुखमंडल पर विवशता झलक रही थी ...क्या कहूँ तुमसे जबसे बैकुण्ठ लोक को वीआईपी की सूची से बाहर कर दिया है यह अब रोज की बात हो गयी है, मेरी छोड़ो तुम बताओ आज इन्द्र के साथ यहां कैसे आये,

प्रभो इन्द्र जम्बूद्वीप के भारत खण्ड में व्याप्त कुछ समस्या का जिक्र कर रहे थे, देवर्षि बोले

इन्द्र अधीर होकर बोल पड़े प्रभो जम्बूद्वीप के भारत खण्ड में बड़ी विकट स्थिति आन पड़ी है.....

क्या हो गया देवराज, विष्णु बोले

प्रभो, अब आप से क्या छिपा है हुआ यह है कि भारत वर्ष में इस समय राज राजेश्वर नरेन्द्र बाहुबली का शासन चल रहा है, उन्होंने पूरे जम्बूद्वीप में एक नया कर 'जीएसटी' लगा दिया है, स्वर्ग में सब देवता बड़े परेशान हो गए है.....

यह वही नरेंद्र बाहुबली है जिन्होंने कुछ समय नोटबन्दी वाला निर्णय लिया था विष्णु बोले.....

जी भगवन, नारद ने कहा.....

कुछ समय पूर्व मेरी अर्धांगिनी लक्ष्मी भी कह रही थी कि उसके भक्तो को यह नरेन्द्र बाहुबली के इस नोटबन्दी के निर्णय से बहुत परेशानी हुई है लेकिन अब यह नया कर क्या लगाया है देवराज?

इन्द्र बोले , महाराज देखिये .....ये समय सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में बारिश का होता है, हर बार यह व्यवस्था वरुणदेव सम्भालते है, इस बार भी मैंने पहले ही वर्कऑर्डर निकाल दिया था लेकिन इस जीएसटी नामक कर के लगा देने से बड़ी मुश्किल हो गयी प्रभो।

ऐसा क्या हुआ देवराज ?

जैसे ही वरुणदेव अपने बादलो को लेकर निकले उनसे नरेन्द्र बाहुबली के अनुचरो ने जीएसटी नम्बर मांग लिया प्रभो,.....बोलने लगे कि बिना जीएसटी नम्बर के कोई भी गुड की डिलेवरी नही की जा सकती,

वरुणदेव ने उनसे कहा कि यह तो व्यवस्था तो सनातन है इस में कैसा जीएसटी नम्बर.....

अनुचर बोले कि, आप कौन ?

वरुणदेव बोले..... कि भाई मैं ही तो यह कार्य सदियो से कर रहा हूँ

अनुचर बोले ओह तो आप सर्विस प्रोवाइडर हो तो आप का सर्विस टैक्स नम्बर कहा है ?

वरुण देव तो चकरा गए प्रभो, वो बोले कि भाई काहे का सर्विस टैक्स नम्बर .....तो नरेंद्र बाहुबली के अनुचर नाराज हो गए बोले यह 70 सालो की कहानी अब नही चलेगी, तुम्हारे जैसे लोगो की ही वजह से इकनॉमी रसातल में जा रही है, जब तक जीएसटी नम्बर नही आएगा इन बादलो की डिलेवरी नही ली जाएगी, ...क्योंकि इस माल पर इनपुट क्रेडिट की भी गणना नही की जा सकेगी....

प्रभु अब आप ही कुछ उपाय निकालो जम्बूद्वीप में अब बारिश कैसे होगी वैसे मैंने चित्रगुप्त को जीएसटी नंबर अप्लाई करने का बोल दिया है, मगर इनपुट क्रेडिट की गणना की तो वह भी नही निकाल पा रहे है.....

करुणानिधि भगवान विष्णु बोले देखो इस मामले में मैं तुम्हारी मदद नही कर पाउँगा तुम ब्रम्हलोक जाकर ब्रम्हा जी से मिल लो।

इन्द्र नारद के साथ बम्हलोक मे ब्रम्हा से मिले .....

ब्रम्हा जी कुछ बनाने में व्यस्त थे, इन्द्र ने अपनी समस्या बताने ही वाले थे, की नारद जी बोल पड़े

हे परमपिता, आप यह क्या बना रहे है ?.....

ब्रम्हा जी ने कहा कि, जम्बूद्वीप के नरेन्द्र बाहुबली के गृह प्रदेश गुजरात मे चुनाव का आयोजन होने जा रहा है उसकी कठोर तपस्या से मै प्रसन्न होकर उसकी मनचाही ईवीएम मशीन बना रहा हूँ,कुछ समय पूर्व भी पिछले चुनाव में भी मैंने ही उसके मनचाहे परिणाम निकालने वाली ईवीएम मशीन बना कर दी थी.....

हा कहो इन्द्र तुम कुछ कहने आये थे..... ब्रम्हा जी ने कहा

इन्द्र ओर नारद एक दूसरे का मुंह देख रहे थे..... .

गिरीश मालवीय

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 32

FREEDOM OF EXPRESSION FOR CARTOONISTS

by Poorva Jain

As India celebrates 71 years of freedom, we take you through how cartoonists across the globe have lost their freedom of expression over the decades

First they came for the Jews
And I did not speak out
Because I was not a Jew.

Then they came for the Communists
And I did not speak out
Because I was not a Communist.

Then they came for the trade unionists
And I did not speak out
Because I was not a trade unionist.

Then they came for the Catholics
And I did not speak out
Because I was not a Catholic.

Then they came for me
And there was no use left
To speak out for me

- Pastor Martin Niemoeller
A victim of the Nazi ascendancy in Germany in the 1930s

A cartoonist however, speaks out for everybody. But still, they go out for him on every possible occasion. Nevertheless after everything, he survives - through his art of saying everything and revealing nothing.

Cartoonists worldwide have organised themselves in cooperative groups and constantly work towards ensuring a safer environment for their community. Some of these groups are very well run even on a very large scale. But the same is missing in India. This may either be because of lack of collaboration between them, or awareness amidst the people about this skill.

There is a vital need for people in our country to get themselves equipped with the knowledge of this art. One way in which this may happen is if they get to know about the significance of the suppression faced by cartoonists in other countries. Since the basic human nature makes them take the sufferer's side, this will significantly add to popular support for cartoonists.

A cartoonist's scope ranges from a mere talk of the town to a universal mishap. And astonishingly, he has a humour for it all. But it just isn't wit which he shows. There is a deeper meaning to all his thoughts, which everyone doesn't appreciate. These undesirable elements have often resulted in unpleasant results for our witty companions.

There is thus, a need to know how cartoonists have faced suppression for their "social work". This information also tells us how open is a particular society, democratic or otherwise.

In this freedom issue of Teekhi Mirch, we are starting a series of incidents in which cartoonists were not so free. We will cover major events from across the globe in which a cartoonist's freedom was suppressed and the consequences he faced.

Most of the information of incidents worldwide has been obtained from websites and articles that were sent by Dr. Robert Russell, Executive Director, Cartoonists Rights Network, International; Vladimir Kazanevsky, Cartoonist, Ukraine; Alex Dimitrov, Cartoonist,

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 33

Moldova; John A. Lent, Professor, School of Communication & Theatre, Temple UniversityPhiladelphia, U.S.A.; and by an interview with Mr. Madhukar Upadhyay, a foremost researcher on cartoons in India.

Incidents curbing freedom of expression for cartoonists across the globe (countries in alphabetical order)

ALGERIA

CHAWKI AMARI WAS ARRESTED FOR MAKING FUN OF HIS COUNTRY'S NATIONAL FLAG

In 1996, **Chawki Amari**, one of Algeria's most famous cartoonists was arrested from his home on July 4. He used to contribute for La Tribune, a major French language newspaper. The reason for his arrest was a cartoon in which he had scoffed at his country's national flag.

In protest to his arrest, journalists wrote a letter to Algerian President Liamine Zeroual. He later received a three-year suspended prison term on July 31, 1996.

Sid Ali Malouah, a cartoonist and comic artist, was forced to go underground in 1995 because his work seemed appalling to some Muslim fundamentalists. There were several attempts on his life.

Guerrovi Brahim was 40 years old when he was found murdered near his home in Algeirs. He used to work for the pro-government Algerian daily El Moudjahid. He was kidnapped on 2 September 1995.

ARGENTINA

Nik, less known as Cristian Dzwonik is a political satirist. In early 1996, when he was in his mid-twenties, he was kidnapped from outside his home, and was

HECTOR OESTERHELD MYSTERIOUSLY DISAPPEARED WITH HIS FAMILY IN 1976 AND NEVER RETURNED

asked to "stop messing around and behave himself". He was then looted and left somewhere near the out skirts of his city.

However, no such incident had happened to him before. He had never even received a threat. President Carlos Menem, whose cartoons he regularly drew, often mocking him, started asking for his originals too.

Hector Oesterheld was not as lucky as Nik. In 1976, he mysteriously disappeared. His daughters, grandchildren and son-in-laws were also among those who vanished. This was the time of the military government in Argentina.

Oesterheld had joined a military group called Montoneros. The reason for his

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 34

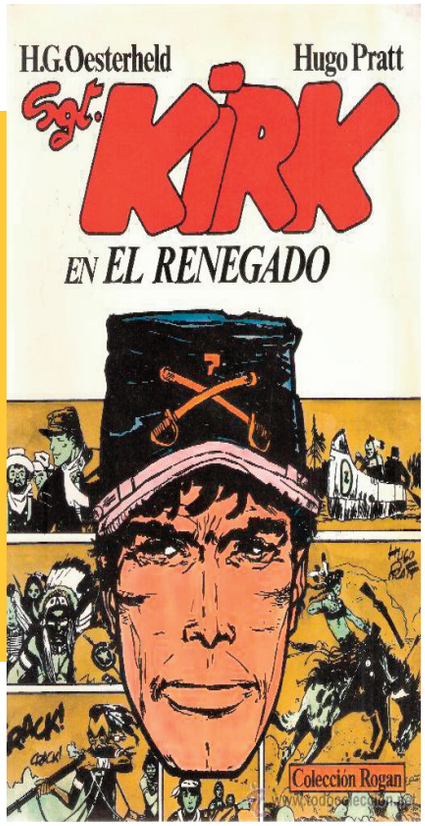

ARGENTINA_HECTOR OESTERHELD HECTOR'S DISAPPEARANCE STILL REMAINS A MYSTERY

disappearance may, therefore not be because he was a cartoonist, but because he was a member of such a group.

In 1979, when an Italian journalist tried to find what happened to him, he was told, "We did away with him because he wrote the most beautiful story of Ché Guevara ever done." His disappearance still remains a mystery.

AUSTRALIA

Born in East Melbourne (Victoria, Australia) in 1945, **Michael Leunig,** one of Australia's most notable cartoonists, faced suppression in 2002 when editors refused to publish his cartoons.

But as they say, every publicity is good publicity, so with these incidents, his cartoons gained more light.

BELARUS

Oleg Minich is a web based cartoonist and was arrested because he drew cartoons on the President of Belarus, Mr. Lukashenko, whom Washington has branded Europe's last dictator.

KGB, the Belarusian security service, called himwith his wife and confiscated their passports after the incident. Minich was shocked by the incident and said that it clearly revealed that his country had no laws.

BOSNIA

CARTOONIST MIDHAT AJANOVIC BECAME A SOLDIER AFTER A DOZEN WERE KILLED AT HIS CARTOON EXHIBITION

The studio of **Midhat Ajanovic,** a well known cartoonist, was destroyed in the war-torn Bosnia-Herzegovina in 1992. However, he didn't lose courage and hope.

A few weeks later he organized a cartoon exhibition of his works in Sarajevo. Suddenly, a Serbian shell hit the building. More than a dozen guests were killed.

Midhat survived and fled with his family to Sweden. He later returned to fight as a soldier in the 7th Croatian/Bosnian Brigade defending Sarajevo.

CAMBODIA

In 1994, a law was passed in Cambodia that prohibited the depiction of cartoon figures such as dog, sheep etc., to represent the members of its government.

CAMEROON

"Gaby" Nyemb used to draw cartoons that would often mock the President of Cameroon. Once a "Goon Squad" came searching for him. They knew nothing

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 35

about pen names and went away when Nyemb showed them his official name badge with his real name on it.

COLOMBIA

Al Fin was a part-time cartoonist for the local newspapers in Colombia. He was forced to move out of his country after his home was raked with machine guns. The drug lords in his country had got annoyed after his continuous mockery at them.

CHINA

In 1992, there was a major uproar in Xining, Qinghai province, after the communist authorities perceived the publication of a comic strip Swiftly Turning Mind as an insult to Islam. It was originally published in Taiwan.

A strip in the book caused the outrage of tens of thousands of Muslims who in a massive street protest, burned police cars and attacked government buildings.

CROATIA

On March 29, 1996, the government in Croatia passed a law in which it became a criminal offence to publish or write a satire on the President, the Prime Minister, the Speaker of the Parliament, or the Chief Magistrates of the supreme and constitutional courts.

CROATIA'S FERAL TRIBUNE HAS ALWAYS CAUSED SOME OR THE OTHER CONTROVERSY

On April 29, 1996, an article published in Feral Tribune caused the arrest of its editor-in-chief. It was blamed that the article defamed the then President Franjo Tudjman. A cartoon accompanied the article. However, no charges were filed against the cartoonist.

DENMARK

In September 2005, Jyllands Posten, a Danish newspaper published twelve satirical cartoons of Prophet Mohammed. Soon there were protests by the local Muslims who said that some of the cartoons represented Prophet Mohammed. It is prohibited by Islam to symbolize the Prophet in any way.
A few radicals soon took up the issue and raised their protests in the Arab world. The subject began to be

THE JYLLANDS POSTEN CARTOONS CONTROVERSY CAUSED WORLDWIDE UPROAR

mentioned in talk shows, websites, and in Friday prayers and spread like wildfire within three months.

Some Arab countries took official action. For example, in January next year, Libya shut its embassy in Denmark in protest and Saudi Arabia recalled its ambassador. Iran's Foreign Ministry summoned the Danish ambassador and demanded an apology. Interior ministers from Arab nations meeting in Tunisia demanded that Denmark punish those responsible for the publication.

In Pakistan, both houses of parliament passed resolutions against the publication of the cartoons and the Foreign Office summoned the envoys of France, Germany, Italy, Spain, Switzerland, Holland, Hungary, Norway and the Czech Republic, in addition to that from Denmark, and lodged protests. The Arab League

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 36

and the Organization of Islamic Conference said they would ask the UN General Assembly to pass a resolution banning attacks on religious beliefs.

The unofficial protests were more alarming. The Danish embassy in Beirut was set on fire. Indonesian protestors charged their Danish embassy. Palestinian demonstrators burnt flags not just of Denmark but its Scandinavian neighbours, Norway and Sweden. They shouted 'Death to Denmark.' A militant group in West Asia is supposed to have issued a warning that all Danes and Swedes should leave Gaza.
With the growing effect, the editor of the Danish newspaper that first published the cartoons apologized in January for offending Muslims, although it stuck to its stand that printing the political cartoons was a journalistic right in a democracy.

On 1 February 2006, some French, Italian, Spanish and German newspapers republished the cartoons as their demonstration of their fight to free expression.

EGYPT

ESSAMHANAFY HAD TO SPEND A YEAR IN JAIL FOR DRAWING CARTOONS ON AN EGYPTIAN MINISTER

In May 1995, the Egyptian government passed a law, which restrained the criticism of public officials. Disrespect for them could result in prison and fine.

EGYPT_ESSAM_HANAFY_ FARMER

Critics of government officials, such as columnists and cartoonists, could be required to prove the accuracy of their account in court.

Cartoonist **Essam Hanafy** once drew cartoons of the Minister of Agriculture and had to spend an year in jail for the offence. Essam was finally released under an annual amnesty granted to journalists.

ENGLAND

NAJI AL-ALI WAS MURDERED IN BROAD DAYLIGHT IN LONDON

Naji Salim al-Ali was one of the best-known Palestinian cartoonists. He drew satirical cartoons on Palestinian and Arab leaders, which became the cause of his death.

He was murdered on a London street in broad

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 37

NAJI'SHANDALA HAS BECOME A SYMBOL OF PALESTINIAN DEFIANCE

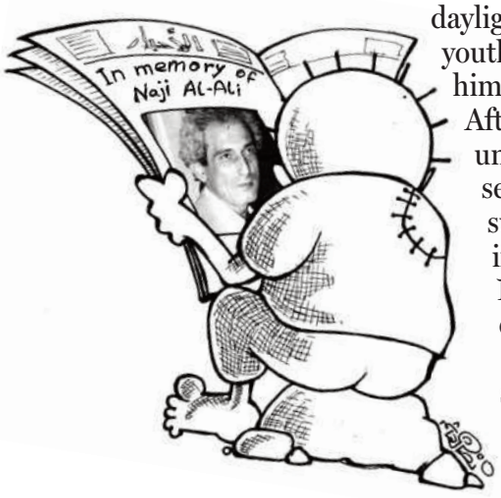

NAJI WORKED CEASELESSLY FOR THE CAUSE OF PALESTINE

daylight. An unknown youth opened fire on him on 22 July 1987. After remaining unconscious for seven days, he succumbed to his injuries on 29 July 1987. He was hit on his right temple. After shooting Al-ali, the youth walked back to his car and was never caught.

Two assumptions regarding his death have been put forward; one of his cartoons on Yasser Arafat's mistresses might have angered Arafat and he ordered Naji's assassination, or Mossad, the Israeli secret service, arranged his liquidation as he drew many effective anti-Israelcartoons.

Al-ali received around 100 death threats before he was murdered. He even drew a caricature of Handala, his most famous creation, as shot and fallen. Handala has now become a symbol of Palestinian defiance.

GREECE

Austrian cartoonist **Gerhard Haderer** was given a six-month jail term for portraying Jesus Christ as pot-smoking hippy. However, the sentence can only come into effect if Haderer travels to Greece.

(In the next edition of Teekhi Mirch, we will focus on the freedom of expression for cartoonists in our own country. Do watch this space for more next month.)

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:15 PM Page 38

बिना मेकअप वाली सेल्फी

सामने बैठी मेरी पत्नी मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रही है और मै डरपोक सा इधर उधर छिपने के लिए कोई जगह तलाश रहा हूँ। सही नंबर के चश्में से भी पहली बार मुझे धुँधला नजर आ रहा है। चश्मा ही क्यों, शायद मेरे पेसमेकर ने भी काम करना बंद कर दिया है। डॉक्टर ने तो कहा था कि अभी कुछ साल आसानी से चल जाएगा पर जब घर में गुर्दा फाड़ने वाला यंत्र मौजूद हो तो भला बाहरी उपकरण भी आपकी कितनी सहायता कर सकते है। अब मेरी पत्नी अपना पल्लू करीब पैतालीस इंच की कमर में बड़ी जद्दोजहद के बाद ठूँसकर बैठ गई है और मेरी राय की प्रतीक्षा कर रही है।

पर शब्द है कि मुझे त्यागकर ब्रह्माण्ड में विलीन हो गए है, लाख कोशिशों के बाद भी जैसे मुँह से हवा ही निकल रही है। किसी भी भाषा के शब्द मेरे मुँह से फूट ही नहीं रहे है। टूटी घड़ियाँ, तीन टाँगों पर हवा के साथ लहराती कुर्सियाँ और चिटके हुए काँच के गिलास मेरी आँखों के सामने नाच रहे हैं। मुँह खोलने से पहले हजार बार सोचना पड़ रहा है कि अपनी बात को किस तरह से व्यक्त करूँ। अगर मैंने इतनी गंभीरता से कभी अपने टीचर की बात को लिया होता तो आज कुछ भी होता पर झोलाछाप लेखक तो कतई ना होता। लेखक होने के बाद भी सारे अक्षर आज मेरा साथ छोड़कर दुश्मन खेमे में चले गए हैं। होंठों को भरपूर कोशिश के बाद कानों तक खींचने के चक्कर में चेहरे पर मुस्कान तो दिख ही रही है।

पत्नी फिर अपनी मधुर आवाज में बोली-''अभी तक आपने मेरी ''बिना मेकअप वाली सेल्फी'' के बारे में कुछ नहीं बताया।

मेरा दिल जैसे बैठ गया।

धड़कन इतनी तेज हो गई जैसे अचानक प्रेमिका का सरप्राइज खुद की पत्नी निकल आए।

मैने कहा-''सुनो...''

वह सुनो शब्द से ही ऐसे खुश हो गई मानों मैंने उस पर सौंदर्यशास्त्र वर्णित कर दिया हो। पहली बार मेरे कानों में खनकती सी आवाज आई-'' जी..''

मैने हाथों से चेहरा पोंछते हुए पूछा -'' रुमाल है?''

''चप्पल चाहिए?'' वह दहाड़ी

''हाँ ... जो जोड़ी में ना हो वह लाकर दे दो।''

आँखों से ही उसने मेरा आधा खून चूस लिया और गरजते हुए पूछा -''लेखक की प्रजाति, कभी आम आदमी की बोलचाल में भी बात कर लिया करो।''

''मेरा मतलब है कि वह चप्पलें जो कई बार तुमने मुझे फेंक कर मारी हैं और जब भी तुम्हारा निशाना गलती से छूट गया और वह नीचे वालों के आँगन में गिरी और उन लोगो का कुत्ता उन्हें दबाकर दूर कहीं ले गया, वह सारी एक -एक चप्पल पड़ी हुई है, वह तुम मुझे लाकर दे सकती हो।''

पत्नी मुझ पर बरसने ही वाली थी कि अचानक उसकी याददाश्त की घंटियाँ बज उठी और वह बोली-''जल्दी से बताइए ना मेरी सेल्फी के बारे में ...''

''हे ईश्वर, अगर इस औरत ने इतनी प्रखर बुद्धि के साथ, कॉलेज के समय पढ़ाई की होती तो मुझे इसको जेब खर्च के चक्कर में ट्यूशन पढ़ाने ना जाना पड़ता और आज मेरी यह दुर्गत ना हो रही होती।''

मैने थूक निगलते हुए कहा-''ओह, तुम्हारे जैसा सच्चा, निर्मल, भोला और सरल व्यक्तित्व भला इस छोटी सी फोटो में कैसे समा पायेगा।''

पत्नी मुझे एकटक ताकती रही मानों कच्चा ही चबा जाएगी। बीस सालों में यह चार शब्द मैंने उसके बारे में शायद कभी सोचे भी नहीं थे, सुनना तो बहुत दूर की बात थी। इसलिए वह मुझे भौंचक्की होकर घूर रही थी। मै आगे बोला, तुम्हारी सूरत को देखकर क्या तुम्हें कभी भी ऐसा लगा कि तुम्हें सजने सँवरने की जरूरत है। तुम्हारी तो सादगी में भी एक ऐसी अदा है जो सामने वाले को लहूलुहान कर दे।''

पत्नी जो अभी तक मुस्कुरा रही थी, अचानक आक्रामक हो उठी और उसने काँच का गिलास उठा लिया।

मैने तुरँत अपने दोनों हाथ सिर पर रख लिए और घुटने मोड़ कर बैठ गया। वह चीखी-''क्या पागलपन कर रहे है? पानी पी रहीं हूँ मै।''

और यह कहते हुए वह पानी का घूँट भरते हुए बिस्तर पर ही पसर कर बोली-''आप शायद हैरान कहना चाह रहे थे। ''

''हाँ...हाँ..तुम्हारी अदा ऐसी है कि सामने वाले को हैरान कर दे। अब मुझे पूरी तरह से समझ में आ गया था कि आज चाहे खाना

••

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 39

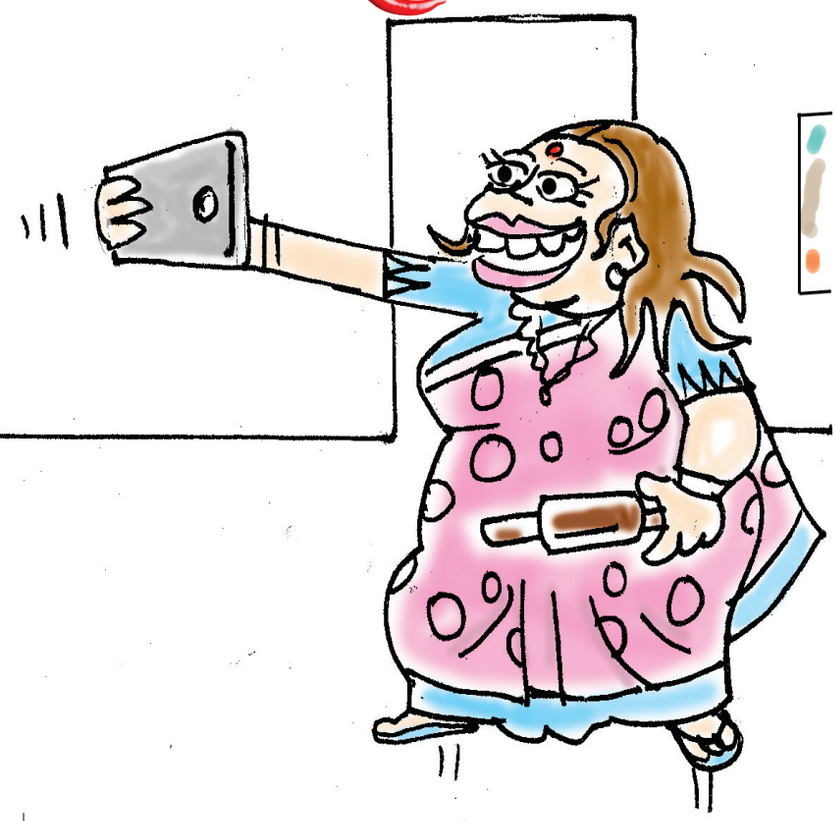

बने या ना बने पर फोटो के बारे में बिना कहे मेरी जान को चैन नहीं है। अजीब ब्याला है यह औरत भी ..मैने भुनभुनाते हुए कहा।

पर वाह रे कान..उसने यह भी सुन लिया और बोली-''अब जल्दी से बता रहे हो या...

बस इसी या.. के बाद के कोई शब्द नहीं होने से मेरी रूह काँप जाती है।

''मैने धीरे से कहा-''तो तुम क्या अभी ही सुनना चाहती हो?''

बालों की लट को बड़ी अदा से घुमाते हुए वह बोली-''बिलकुल..जल्दी बताओ।''

मेरा मन हुआ कि मै अपने सिर के बाल नोंच लूँ या किसी पत्थर पर अपनी खोपड़ी पटक दूँ। इतनी बदसूरत फोटो मेरे सामने पड़ी हुई थी। अरे, ठीक है अगर भगवान ने चेहरे में कोई त्रुटि कर दी है तो उसे रंग-रोगन करके ठीक करने में कोई बुराई नहीं है और अगर चेहरे पर मेकअप नहीं करना है तो कम से कम जुबान पर ही डेंटिंग पेंटिंग कर लो।

यहाँ तो डर के मारे शब्द ही भागे जा रहे है। समझ ही नहीं आ रहा है कि क्या बोलूँ और क्या ना बोलूँ। ज्यादा सच्चाई दिखाने के चक्कर में फोटो को अँधेरे में जाकर खींचने की पता नहीं क्या जरूरत थी। वह भी सारे दाँत फाड़कर हँसते हुए। उसको भी ना जाने किस हिसाब से ब्राइट कर दिया कि चेहरे पर तो मामूली असर हुआ पर चमकते हुए दाँत लाल दंत मंजन का विज्ञापन देते हुए नजर आ रहे है। अब क्या कहूँ और क्या छिपाऊं...हे भगवान किस मुश्किल में डाल दिया है तुमने मुझे।

मैंने फोटो का विश्लेषण करने के बाद पत्नी की आँखों में झाँका जो मुझे एकटक देख रही थी।

मैंने कहा-''जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, मेरी कई पुश्तों में कभी किसी ने झूठ नहीं बोला।''

पत्नी तिरछी नजर से देखती हुई बोली-''हाँ हाँ ..वह तो मै पिछले बीस साल से देख ही रहीं हूँ। पर अभी आप सच ही बोलिये।''

''पर तुम तो जानती ही हो कि सच बहुत कड़वा होता है।''

''हाँ.. मैं सुन लूंगी।''

''ठीक है, पर एक मिनट रुको। मै जरा कमरे के अंदर चला जाऊं।''

''क्यों...''

''ऐसे ही मेरा मन कर रहा है। ज्यादा सच्चाई मुझसे बर्दाश्त नहीं हो पा रही है।''

''अच्छा ठीक है, आप कमरे के अंदर से ही बोलिए।''

''मैं मोबाइल उठाकर कमरे के अंदर भागा और झट से कुंडी लगा ली।अंदर जाकर मैने पत्नी की सेल्फी को भरपूर नजरों से देखा और कहा-''मै कुदरत के फैसलों में दखल अंदाजी नहीं करता। तुम मेरी नजर में इसलिए खूबसूरत हो क्योंकि तुम मेरी जीवन संगिनी हो। मेरे बच्चों की माँ हो और मै तुमसे सच्चा प्यार करता हूँ । जहाँ तक फोटो की सच्चाई की बात है तो तुम्हारे दाँत खरगोश जैसे है जो हँसते समय लिज्जत पापड़ का विज्ञापन देते नजर आते है और यह जो तुम पँद्रह सालों से लगातार डाई कर रही हो और आज तुमने अचानक बिना डाई किये हुए फोटो डाले हैं तो ऐसा लग रहा है मानों काले मेघों के बीच रह रहकर चमचमाती बिजली कड़क रही है।

बाहर से जब कोई आवाज नहीं आई तो मैंने धड़कते हुए दिल से कुंडी की तरफ देखा।

कुंडी ठीक से बंद थी।

मैंने अंदर से ही पूछा-'' तुम सुन रही हो ना।''

मेरी पत्नी जिसने कभी मैदान छोड़ कर जाना सीखा ही नहीं था, बोली-''सब सुन रही हूँ..थोड़ा और बताइये।''

आवाज में गंभीरता का पुट था पर मेरे पिटने के आसार नहीं थे इसलिए मेरी हिम्मत बढ़ी और मै बोला-''तुम्हारी आँखों के नीचे काले घेरे हैं जिन पर अगर तुम खीरा रखो तो घेरे मिट जाएँगे। चेहरे पर हल्दी और शहद लगाने से थोड़ी लुनाई भी आ जायेगी और यह जो तुमने मुँह के ऊपर पांच अलग अलग तरह की नेल पॉलिश लगाकर उँगलियाँ रखी हुई है वह मुझे इंद्रधनुष की याद दिला रही है। और अगर तुम रोजाना चार किलोमीटर टहलो तो तुम्हारा कमरा मेरा मतलब है कमर ....''

बात पूरी होने से पहली ही पत्नी दहाड़ी -''चेहरे की सेल्फी में तुम्हें कमर कहाँ से दिख रही है।''

और इसके साथ ही दरवाजे पर उसके मजबूत हाथों की थाप सुनाई दी

मै तुरँत पलंग के अंदर घुस गया।

दरवाजा खोलो....

नहीं..कभी नहीं....

अरे, खोलो तो ...मुझे मोबाइल चाहिए।

यह सुनकर मै पलंग के अंदर से निकला और मैने धीरे से पूछा, क्यों चाहिए मोबाइल।

मेकअप करके सेल्फी लेनी है..बाहर से पत्नी के खिलखिलाने की आवाज आई।

और मैने कुंडी खोलकर अपना हाथ दरवाजे के बाहर बढ़ा दिया।

डॉ. मंजरी शुक्ला

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 40

THE UNCOMMON MAN

R K LAXMAN

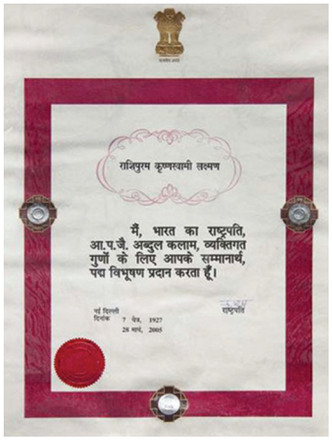

For more than 50 years, a man had silently voiced the opinion of India. He would peep in from the front page of the newspaper every morning, and would leave us with a smile on our faces. He was the great cartoonist RK Laxman's Common Man.

Rasipuram Krishnaswami Laxman was one of the most well-known Indian cartoonists, and will always remain. If we are to ask any common Indian the name of one Indian cartoonist, he would undoubtedly say, Laxman.

Born in 1921 in the then-Mysore state, Laxman started his cartooning journey at almost the same time when India got independence.

Laxman's fascination with drawing began at a very early age while he was in school. Even before he could read, he would just sit gazing at the illustrations in newspapers and magazines such as The Strand Magazine, Punch, Bystander, Wide World and Tit-Bits.

Another major influence on the little Laxman was the work of the world-renowned British cartoonist, Sir David Low whose cartoons would often appear in The Hindu. He misread Low's signature as 'cow' for a long time!

Laxman would sit sketching in his classroom too. Once he drew a doodle of his teacher looking like a tiger cub, which, of course, sent the entire classroom into a tizzy.

After high school, Laxman applied at Bombay's famous JJ College of Art, but was rejected there. He was told that 'his drawings lacked the kind of talent to qualify for enrolment in our institution as a student'. Later Laxman was invited as a Chief Guest at the same JJ College when he had become a big name in the world of cartooning!

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 41

Anyway, the rejection didn't disappoint him, and he studied Bachelor of Arts from the University of Mysore. During his studies, he also started taking up work as a freelancer in newspapers. He contributed cartoons to Swarajya and an animated film based on the mythological character, Narada. He also sketched for his brother RK Narayan's famous 'Malgudi Days'.

Laxman's big break came when he was asked to draw a cartoon strip on the notorious Kalbadevi shooting for the then-popular investigative weekly tabloid newspaper, Blitz. Another famous Indian cartoonist Abu Abraham also contributed his early work in Blitz.

As a 20-year-old, Laxman got his first full-time job as a political cartoonist at Mumbai's Free Press Journal. It was here that he met Bal Thackeray, who worked as a cartoonist before starting his political party, the Shiv Sena. They remained dear friends till Thackeray's death on 17th November 2012.

After that, Laxman moved to The Times of India in 1947. Rest, as they say, is history. As the ToI's cartoonist, Laxman had a field day - always taking a bit cynical, humorous, and hapless, view of the Indiapost independence.

A decade after he joined ToI, he created his famous Common Man, in 1957 who featured in his cartoon strip 'You Said It'. However, the common man never said anything, but watched everything, like an average Indian. The antics of all Laxman's powerful subjects - who became equal under his brutal pen and brush - were reduced to ordinary jokes or public buffoonery. He spared none, from Nehru to Rajiv, and everyone in between.

WHAT LAXMAN SAID...

- CHANGE? DOES THE COLOUR OF THE SKY CHANGE EVER? MY SYMBOL WILL NEVER CHANGE.
- I AM GRATEFUL TO OUR POLITICIANS. THEY HAVE NOT TAKEN CARE OF THE COUNTRY, BUT ME.
- MY COMMON MAN IS OMNIPRESENT. HE'S BEEN SILENT ALL THESE 50 YEARS. HE SIMPLY LISTENS.
- MY SKETCH PEN IS NOT A SWORD, IT'S MY FRIEND.
- NOTHING LIKE INDIA FOR CARTOONING AND DRAWING!

WHAT THEY SAID AFTER LAXMAN'S DEMISE...

- RK LAXMAN CONVEYED IMPORTANT SOCIAL MESSAGES USING HUMOUR AS A TOOL AND REMINDED THE PUBLIC THAT PEOPLE IN AUTHORITY ARE FALLIBLE AND HUMAN.

PRESIDENT PRANAB MUKHERJEE

- WE ARE GRATEFUL TO RK LAXMAN FOR ADDING THE MUCH NEEDED HUMOUR IN OUR LIVES AND ALWAYS BRINGING SMILES ON OUR FACES.

PRIME MINISTER NARENDRA MODI

- LIFE EVEN FOR THE COMMON MAN BECOMES WORTH LIVING WITH SHRI LAXMAN'S WIT AND WISDOM IN FULL CRY. TO LAUGH AND MAKE OTHERS LAUGH AND TO THINK AND MAKE OTHERS THINK IS THE UNIQUE GIFT OF EVERY CARTOONIST OF REPUTE.

DR. APJ ABDUL KALAM

- RK LAXMAN'S 'COMMON MAN' REPRESENTED INDIA FOR MORE THAN ONE GENERATION.

SONIA GANDHI

Google's Doodle on Laxman on his first death anniversary

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 42

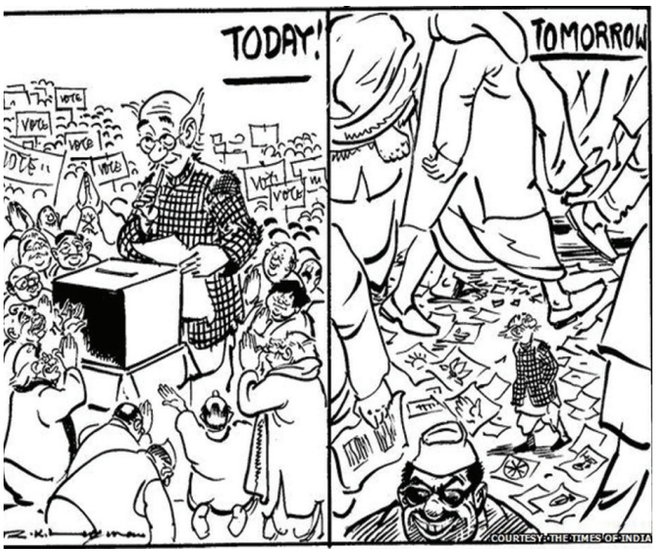

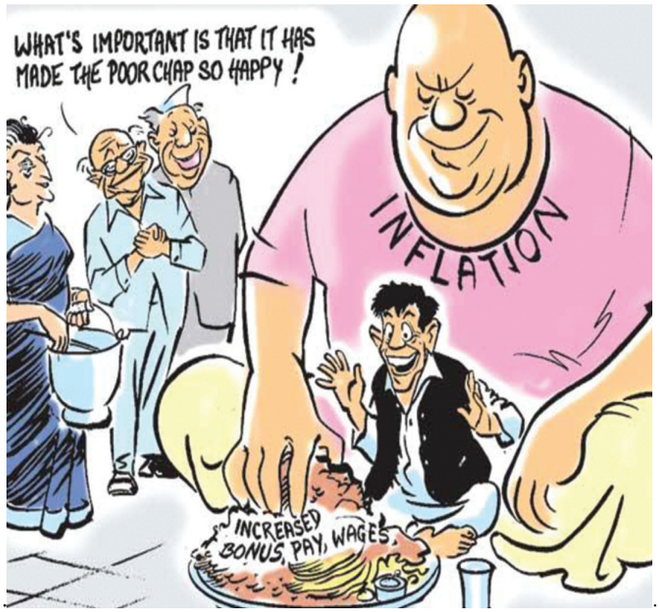

In 1993, Laxman suffered his first cardiac arrest, and later called it a day at The Times of India. But the readers wouldn't have it. It's said that phones at the ToI's office didn't stop ringing the day Laxman's cartoon didn't feature on the front page, and hundreds of letters poured in. The Times management literally dragged him out of retirement and welcomed the common man back on its front page. Laxman was rewarded with lifetime employment at ToI post that. He continued as a regular full-time employee and drew his salary till the end.

Laxman continued cartooning for the Times till 2010, even after suffering a second stroke in 2003 which paralysed his left side. In 2010, he suffered another stroke which robbed him of his speech. Ill-health forced him to stop cartooning for the Times but he continued drawing till the very end. Laxman's works have been compiled into a whopping nine volumes of pocket cartoons. A book of select political cartoons, 'The Eloquent Brush' featuring his best commentaries from the Nehru to Rajiv Gandhi eras.

In addition to being a cartoonist, Laxman was also a writer and had published numerous short stories, essays and travel articles. He directed a movie, 'Wagle ki Duniya' for national television. A Hindi television serial 'RK Laxman ki duniya', which was based on his books completed 353 successful episodes on SAB channel.

Some of Laxman's short stories, essays and travel articleshave been collected in the book, The Distorted Mirror. He also authored three works of fiction, The Hotel Riviera, The Messenger and Servants of India. Several collections of Laxman's cartoons have been published in the series The Best of Laxman and Laugh with Laxman. In 1998, Laxman's autobiography, The Tunnel of Time,was published.

RK Laxman won numerous awards for his cartoons, including Asia's top journalism award, the Ramon Magsaysay Award, in 1984. The University of Marathwada and the University of Delhi conferred honorary Doctor of Literature degrees on him. In 2005, the Government of India honoured him with India's second highest honour, the Padma Vibhushan.

Laxman spent the last few years of his life in Pune. In the middle of January 2015, he was admitted to the hospital to treat a throat infection but complications ensued. The end of India's Uncommon Man came after multi-organ failure on 26 January 2015. The same year in November, his wife Kamala also left the world. After Laxman's death, she had said 'I will join you soon', and she lived up to her word.

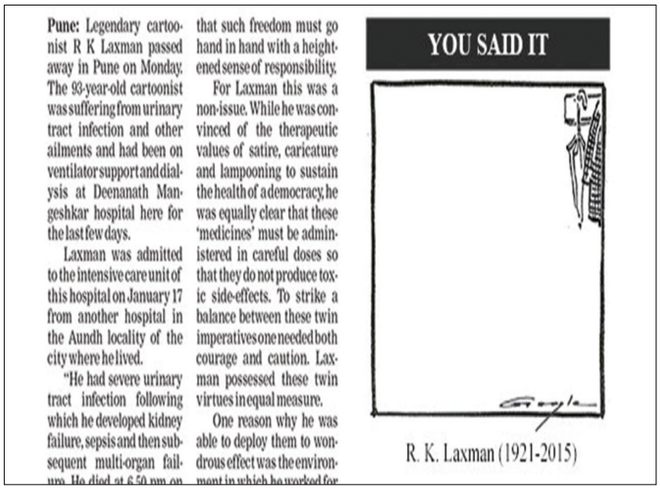

Pune: Legendary cartoonist R K Laxman passed away in Pune on Monday. The 93-year-old cartoonist was suffering from urinary tract infection and other ailments and had been on ventilator support and dialysis at Deenanath Mangeshkar hospital here for the last few days.

Laxman was admitted to the intensive care unit of this hospital on January 17 from another hospital in the Aundh locality of the city where he lived.

"He had severe urinary tract infection following which he developed kidney failure, sepsis and then subsequent multi-organ fail-

that such freedom must go hand in hand with a heightened sense of responsibility.

For Laxman this was a non-issue. While he was convinced of the therapeutic values of satire, caricature and lampooning to sustain the health of a democracy, he was equally clear that these 'medicines' must be administered in careful doses so that they do not produce toxic side-effects. To strike a balance between these twin imperatives one needed both courage and caution. Laxman possessed these twin virtues in equal measure.

One reason why he was able to deploy them to wondrous effect was the environ-

YOU SAID IT

R. K. Laxman (1921-2015)

Because nobody said it after that! ToI's tribute to RK Laxman the day after his death

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 43

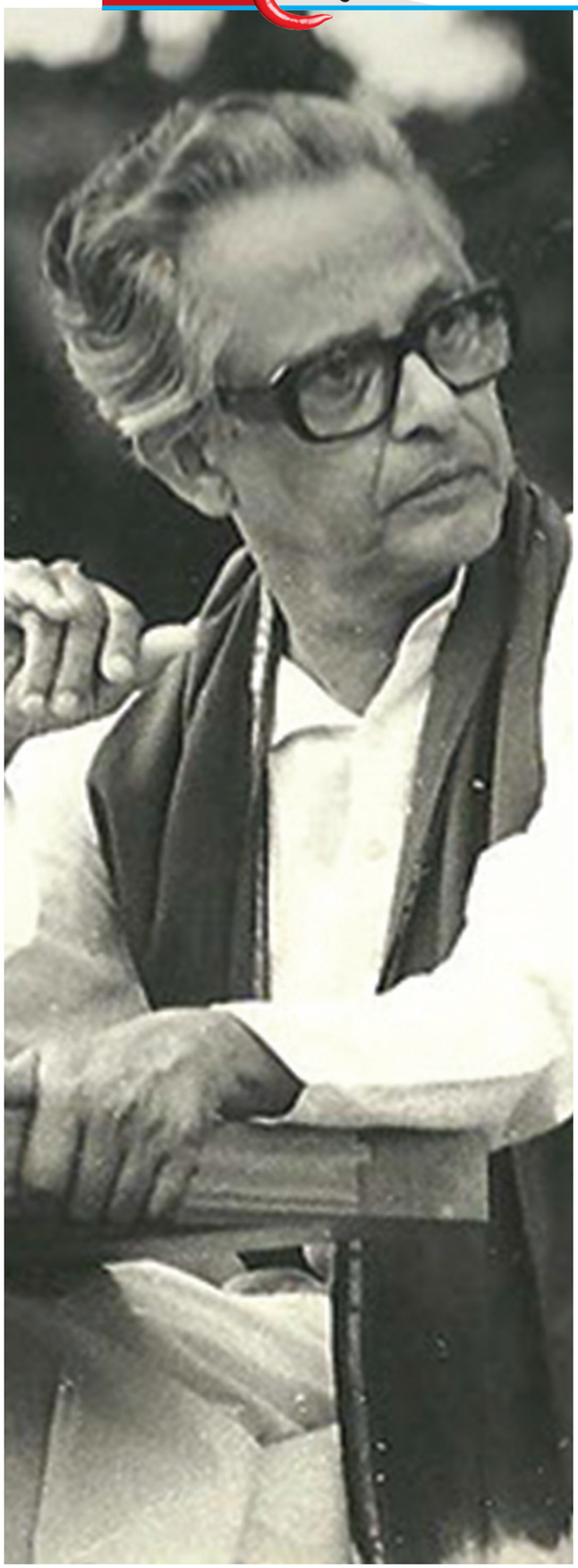

पता नहीं मैं कैसे कार्टूनिस्ट बन गया

(सुविख्यात कार्टूनिस्ट स्वर्गीय आर के लक्ष्मण का यह साक्षात्कार सन 1993 में 'धर्मयुग' के लिए सुदर्शना द्विवेदी ने लिया था)

कैसा स्वभाव जरूरी है कार्टूनिस्ट होने के लिए ?

हरेक चीज के लिए एक स्वस्थ अवमानना और विनोद वृत्ति (सेस ऑफ ह्यूमर) कार्टूनिस्ट के स्वभाव के लिए जरूरी अंग हैं।

मगर यह अवमानना और विनोद की वृत्ति कुछ को चोट भी तो पहुंचा सकती है?

यह व्यक्ति पर निर्भर करता है अगर व्यक्ति की वृत्ति न हो तभी उसे चोट पहुंच सकती है। उसमें विनोद वृत्ति हो तब नहीं, बल्कि अपना मजाक उड़वाने में भी मजा आता है अगर आप मजबूत इरादेवाले व्यक्ति हों और जानते हों कि क्या हैं तो आपको चोट नहीं पहुंचती है यह तो है ही कि कुछ चीजें मजाक उड़ाने की होती ही नहीं जैसे किसी की मां, बुढ़ापा, मौत, दुर्घटना मेंपाया लूला-लंगड़ा, अंधापन, इसका ध्यान रखना पड़ता है कार्टूनिस्ट को, अवमानना भी स्वस्थ होनी चाहिए और स्वसी कारणों से मजाक उड़ाते समय भी करुणा की बात भूली नहीं जा सकती।

आम व्यक्ति में, कहते हैं, विनोद वृत्ति की कमी है?

यह एक गलत धारणा है। विनोद वृत्ति आम आदमी में बहुत होती है। 47 साल तक मैं कैसे लोकप्रिय रहता, अगर पूरे देश और विदेश के भी लोग मेरी कला सराहते-समझते नहीं?

आपकी कार्टूनों पर कभी नाराजगी भी जाहिर हुई है?

बहुत बार नाराजगी भी ऐसी कि मेरी जान लेने की धमकियां दी गयी। मगर मैं इन पर ध्यान नहीं देता क्योंकि या तो ऐसे लोग मेरी बात ही गलत ढंग से समझ लेते हैं या वे मुझे कोई धर्मप्रचारक या उपदेशक मान बैठते हैं। मगर मैं न धर्मप्रचारक हूं न उपदेशक मैं लोगों से यह नहीं कहता कि वे जीवन कैसे जियें, मैं तो केवल उनकी कमजोरियों, असफलताओं और मूर्खताओं की तरफ इशारा करता हूं, मगर यदि कोई व्यक्ति अपनी मूर्खता की ओर इंगित करने केलए मुझे जान से मार डालना चाहे तो ऐसे मुर्ख व्यक्ति को तो मुझे नजरअंदाज ही करना पड़ेगा।

कोई वाकया सुनायेंगे?

एक बार एक आदमी ने मुझे लैटर-बम भेज दिया था। यह भारत-पाक संघर्ष्ज के दौरान की बात है। सौभाज्य से मेरे सिपॉय ने इसे देख लिया। यह बम अमरीकन कांसुलेट के लिफाफे में भेजा गया था। जब मैंने कांसुलेट से पता किया तो मालूम हुआ कि उन्होंने तो कुछ भेजा ही नहीं है मेरे पास। फिर पुलिस आयी और उस लिफाफे को लेकर गयी। यह 70 के दशक की बात है। अब ये हिंदू रुढ़िवादी हैं। इन्हें मेरे बनाये अधिकांशतः कार्टूनों पर आपत्ति है। ये तो ओमबुड्समैन तक के पास चले गये। मगर यह स्वतंत्र देश है जो अचानक तो तानाशाही में बदल नहीं सकता। यह तानाशाही बने तो, तब मैं भी हुक्म मानने लगूंगा।

तब आपातकला के दौराना तो आपको बड़ी परेशानी हुई होगी?

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 44

आपातकाल में तो बहुत दिक्कत आयी थी। दरअसल मुझ पर तो एकदम ही रोक लग गयी थी। तब मैं श्रीमती गांधी से मिलने गया, उन्होंने बहुत कृपापूर्वक मुझे वह करने की अनुमति दी जो मैं करना चाहता था मगर तत्कालीन सूचना प्रसारण मंत्री शुक्ल नहीं चाहते थे कि मैं कांग्रेस पार्टी या आपातकाल पर कोई भी कार्टून बनाऊं। उन्होंने कहा कि अगर आपने अपना काम जारी रखा तो आपको कैद कर लिया जायेगा। मैं तो तब त्यागपत्र देना चाहता था। 38 साल की नौकरी तो हो ही चुकी थी मेरी आखिर मैं महीने भर के लिए मॉरिशस चला गया क्योंकि यहां तो मेरी कोई जरूरत थी नहीं वहां मुझे पता चला कि श्रीमती गांधी ने आम चुनाव की घोषणा की है। वे हार गयीं और मैं वापस अपने काम पर जुट गया।

इससे तो काफी प्रेरणा मिली होगी आपको?

ढेर सारी! एक पूरी किताब आयी है इस पर।

आप राजनीतिक कार्टून ही क्यों बनाते हैं?

क्योंकि मैं राजनीतिक कार्टूनिस्ट हूं, सुब्बुलक्ष्मी से पूछिए वे कर्नाटक संगीत ही क्यों गाती हैं।

मगर जीवन में तो बहुत सारे विषय भरे पड़े हैं?

कहां ? भारत में तो सिर्फ एक ही विषय है राजनीति। दूसरे देशों की तरह यहां कोई दूसरा विषय है ही नहीं। यहां हर चीज रानीति से जुड़ी हुई है। किसी पार्टी में भी चले जाइए बात राजनीति की ही होगी। चाहे व्यापार-वाणिज्य हो, चाहे न्यायपालिा हो, चाहे सिनेमा हो, चाहे अपराध-हर चीज रानीति से जुड़ी है। मुझे एक चीज दिखाइए जो राजनीति से जुड़ी हुई न हो। अरे स्कूलों के दाखिलों तक में तो रानीति है।

आप इस समय शीर्ष पर हैं . . .

हूं क्या ? यह तो मुझे पता नहीं था शीर्ष्ज तो बड़ी खतरनाक जगह है, देखिए रेड्डी और नरसिम्हाराव के साथ कया हो रहा है।

इसीलिए तो यह सवाल है कि क्या आप यहां असुरक्षित महसूस नहीं करते?

भई, मैं तो नहीं सोचता कि मैं शीर्ष पर हूं या तल पर हूं, मैं अपना काम करता हूं और उससे संतुष्ट हूं मेरे मन में ऐसा कोई विचार नहीं है कि मैं सर्वश्रेष्ठ हूं।

सिम्बोयसिस केम्पस पुणे में अपने 'कॉमन मेन' के साथ आरके लक्ष्मण

तब भारत के सर्वश्रेष्ठ कार्टूनिस्ट कौन हैं?

पता नहीं यह मैं नहीं बता सकता।

बाल ठाकरे ने 85 में इलेस्ट्रेटेड वीकली को दिये साक्षात्कार में दो कार्टूनिस्टों को सर्वश्रेष्ठ कहा था-स्वयं को और आपको। इस बार जब उनसे बात हुई तो उन्होंने सिर्फ आपका नाम लिया। अब आपको कुछ कहना है?

शायद वे ठीक ही कहते हैं। शायद मैं शीर्ष पर, लाचारी में। हालात ने मुझे यहां धकेल दिया है। मगर शीर्ष पर होने की भावना मुझ में कभी नहीं है। अगर मैं शीर्ष पर हूं तो बस हूं, इतना ही है।

आप और किन्हें अच्छे कार्टूनिस्ट कहेंगे?

मैं दूसरे कार्टूनिस्टों पर टिप्पणी नहीं करता।

कार्टून कला का भविष्य क्या है? आपने तो बड़ी लंबी पारी खेली है। अब आप भविष्य के बारे में जरूर सोच रहे होंगे कि आपकी जगह कौन ले सकते हैं?

मुझे महसूस होता है कि इस कला में लापरवाही आती जा रही है। मेरे वक्त से अब तक यह कला बढ़ी है, मगर मैं पाता हूं कि लापरवाह कार्टूनिस्ट अखबारों में जगह बना रहे हैं कहीं संपादकीय स्तर पर कोई जांच-पड़ताल है ही नहीं। मेरे कार्टून जरूर कभी किसी संपादक ने नहीं जांचे है, मगर नयी-नयी पत्रिकाओं और अखबारों में जो कार्टून छप रहे हैं वे लगता है दिमाग पर बिना जोर डाले बनाये गये हैं, जो मन में आया बना दिया न कोई रानीतिक समझ हैं, कम-से-कम विनोद तो ऐसा हो कि किसी दखी-समझी-बूझी चीज का कार्टून बनाया गया हो! इसके अलावा इनमें बहुत सारे तो चुराये हुए होते हैं। अभी आज ही एक पत्र मिला है जिसमें एक कार्टून प्रतियोगिता का नतीजा रोक लिया गया है। कारण मालूम है? प्रथम पुरस्कार विजेता महोदय ने मेरा ही एक पुराना कार्टून चुरा कर प्रतियोगिता में भेज दिया था। एक-आध रेखा इधर-उधर कर दी थी। बंगलोर के मेरे एक पुराने पाठक ने इसे देखा तो वह कटिंग मेरे पास भेजी। मुझे आयोजकों को इसकी इत्तला देनी ही पड़ी लिहाजा पुरस्कार रूक गया, मान लीजिए की बंगलोर का पाठक नहीं होता तब? तब तो चोरी के कार्टून पर पुरस्कार मिल ही गया होता।

तो भविष्य क्या होगा कार्टून का ?

लोग संजीदा नहीं है इस मामले में यही जो घटना अभी बतायी इन्हें ही अगर पुरस्कार मिल गया होता तो ये अपना काम जारी रखते मेरे नहीं तो किसी और के कार्टून थोड़ी-बहुत फेरबदल करके चुराते रहते और यह बताते हुए कि यह पुरस्कार विजेता भी हैं, इन्हें अखबारों-पत्रिकाओं में भेजते रहते और मूर्ख संपादक इन्हें छापते रहते जहां ऐसा होने लगता कार्टूनिस्ट महोदय को लगता कि वे अब स्थापित हो गये हैं, और वे अपने को खुल्लमखुल्ला कार्टूनिस्ट घोषित कर देते मगर यह सच थोड़े ही है! कार्टूनिस्ट बनने के लिए बहुत सारे क्षेत्रों में 10 से 15 वर्ष तक कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पढ़ना पड़ता है। सामान्य ज्ञान, विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, विदेशी मामले सबकी गहरी जानकारी हासिल करनी पड़ती है। इसके अलावा उसे मानव आकृति बनाना भी अच्छी तरह आना चाहिए केवल गोदागादी (डूडलिंग) आना काफी नहीं है। गोदागादी करके कार्टून नहीं बना सकते आप।

इस स्थिति को सुधारा कैसे जा सकता है, क्योंकि यह कोई स्वस्थ स्थिति नहीं है?

हां नहीं है, इसे सुधार सकते हैं अस्वीकृति से सांदकों के अस्वीकार से लोगो को लगता है कि कोई भी कार्टूनिस्ट बन सकता है। मेरे पास बहुत से लोगों के पत्र आते हैं जो कार्टूनिस्ट बनना चाहते हैं, इनमे मेडिकल के छात्र भी होते हैं, इंजिनियरिंग के छात्र भी मगर यह संभव नहीं है हर कोई कार्टूनिस्ट नहीं बन सकता। सिर्फ इसलिए इस पेशे में आने की चाह कि इसमें पेसा है, ख्याति है, छपने की संभावना है, गलत है, काम का छपना महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए। मैंने 7 साल तक इस बात की परवाह नहीं की थी कि मेरा काम छपे भी मैं अपने संतोष के लिए कार्टून बनाता था और आज भी बनाता हूं।

क्या यह संभव है कि आपने जो राह अपनायी उस पर चलने के लिए नये कार्टूनिस्टों को भी प्रेरित किया जा सके?

मुझसे किसी ने कार्टूनिस्ट बनने को कहा थोड़े ही था! मैं बहुत अच्छे परिवार

●●

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 45

से हूं जहां पढ़ने-लिखने का माहौल था। मेरे भाई लेखक हैं। मगर मेरे परिवार में चित्रकार कोई नहीं है पता नहीं मैं कैसे कार्टूनिस्ट बन गया। दरअसल यह चीज कुछ ऐसी है जैसे किसी में संगीत के लिए नृत्य के लिए एक खास प्रतिभा होती है। और वह संगीतकार, नर्तक बन जाता है। यह 'स्पार्क' स्वतः स्फूर्त होता है, इसे चाहने से नहीं लाया जा सकता अगर नैसर्गिक रूप से सुरीली आवाज न हो तो गायक नहीं बना जा सकता।

मगर संगीत की प्रतिभाओं को स्कूलों या आकादमियों के माध्यम से निखारा जा सकता है अकादमियों के माध्यम से निखारा जा सकता है। क्या ऐसा कार्टूनिस्टों के मामले में संभव नहीं?

नहीं, दूसरा कोई मदद नहीं कर सकता आप खुद ही अपनी मदद कर सकते हैं। कोई शिक्षक आपको कार्टून बनाना नहीं सिखा सकता। वेसे भी अगर शिक्षक कार्टून बनाना सिखा सके तो फिर यह 5000 रूपये वेतनवाला शिक्षक क्यों बनेगा, खुद ही 50,000 रूपये कमानेवाला कार्टूनिस्ट नहीं बन जायेगा? यह कला दूसरे का संप्रेषित की जा ही नहीं सकती। जब लोग मेरे पास आते हैं कहते हैं हमें कार्टून बनाना सिखा दीजिए, मुझे बहुत गुस्सा आ जाता है उन पर। क्योंकि मैं खराब ड्राइंग बर्दाश्त ही नहीं कर सकता। और जब मैं उन्हें समझाता भी हूं तो वे समझ ही नहीं पाते ग्रहण नहीं कर पाते मेरा अर्थ मैं कहता हूं कि रेखाएं देख कर चित्र बनाना मत सीखों वास्तविक जीवन देखो और चित्र बनाओ मेरे सारे चित्रों की एक-एक रेखा मैंने वास्तविक जीवन से ली है। चाहे वह बैठा हुआ व्यक्ति हो, खड़ा हुआ हो या साधु हो। आप चित्रकार हुए बगैर कार्टूनिस्ट हो ही नहीं सकते। चित्रकार से मतलब है कि आपको रेखाचित्र बनाने आते हों, ड्राफ्ट्समैनशिप होनी चाहिए आप में शब्दों के कैप्शन से जुड़ा रेखाचित्र भी बेहद जरूरी है। अगर आपको ऐसा महसूस नहीं होता तो कार्टून बनाते ही क्यों है? सिर्फ कैप्शन लिख दीजिए!

वैसे कैप्शन कितना महत्वपूर्ण है?

जैसे दायें हाथ के साथ बायां हाथ महत्वपूर्ण है, वैसा ही महत्वपूर्ण है कैप्शन एक-दूसरे से जुड़े हैं दोनों।

आपका सबसे विवादास्पद कार्टून कौन-सा रहा है, जिसने खूब गर्मी पैदा की हो?

याद नहीं आता वैसे मेरे कार्टून तो हमेशा सुखद वातावरण ही बनाते रहे हैं।

मगर कुछ ने कई दिल जरूर जलाये होंगे?

हां, जलाये होंगे मगर मैं लोगों की राय सुनता नहीं। मैं वैसा आदमी नहीं हूं कि जो कुछ बनाने के बाद लोगों से पूछते घूमते हैं, उनकी राय मांगते रहते हैं। मैं कभी नहीं करता यह सब मेरे लिए तो यह मेरा काम है जो मेरे कार्टून बनाते ही खत्म हो जाता है। हां, लोग आ कर मेरे कार्टून खरीदते जरूर हैं। बहुत सारे कार्टून बिके हैं और हाल ही में शरद पवार का जो कार्टून बनाया था (कि शरद पवार का वजन दोनों तरह से कम हो रहा है) वह बहुत सारे लोग खरीदना चाहते थे। मगर फिर एक अमरीकी प्रोफेसर थे फिलाडेल्फिया के जो कार्टून को खरीद कर ले गये।

आप अपने आम आदमी के बगैर अपनी कल्पना कर सकते हैं?

हां, मगर क्या वह बगैर मेरे अपनी कल्पना कर सकता है?

मगर वह बहुत लोकप्रिय है न !

हां, वह तो पोस्टेज स्टैम्प पर भी विराजमान हो चुका है।

महिलाएं कार्टून क्यों नहीं बनाती?

इस सवाल का जवाब मैं नहीं दे पाऊंगा, आप दीजिए।

ये स्वभाव से निष्ठुर नहीं होती, इसलिए तो नहीं?

निष्ठुर नहीं होती? रहने दीजिए मेरे अनुभव अलग हैं।

आप लंबे समय से कार्टून बनाते आ रहे हैं, आप थके नहीं?

नहीं अगर थक जाऊं तो मैं कार्टूनिस्ट ही नहीं, कार्टूनिस्ट कभी थकता नहीं, मेरा काम मुझे नयी स्फूर्ति देता है। जितना ताजादम यहां पहले दिन महसूस करता था वैसा ही मुझे आज भी महसूस होता है। अपने में वही ताजगी और विस्मय की वही भावना महसूस होती है, जो काम के पहले दिन हुई थी। ऐसा न होता तो मैं बासी हो गया होता।

कार्टूनिस्ट हो कर कया खोया है आपने ?

अच्छा सवाल है, बहुत सारे काम कर सकता था मैं अगर कार्टूनिस्ट न होता तो मैं जादूगर बन सकता था, रस्सी पर चल सकता था या घड़ियों की मरम्मत कर सकता था, मेकेनिकल इंजिनियर बन सकता था। मशीनें और जादू दोनों मुझे बहुत पसंद हैं।

लक्ष्मण अपनी धर्मपत्नी कमला लक्ष्मण के साथ

युवा आरके लक्ष्मण अपने आदर्श कार्टूनिस्ट डेविड लो के साथ

और क्या पसंद है आपको?

कौए, कौए बहुत अच्छे लगते हैं मुझे कौआ के मेरे चित्र दस-दस हजार में बिके हैं। प्रदर्शनियां भी की हैं। अभी नवंबर में फिर होगी मुंबई और बंगलौर में इसके अलावा कैलेंडर्स भी डिजाइन करता हूं।

फायदे क्या हुए आपको कार्टूनिस्अ बनने के, पहचान और यथ के अलावा?

पैसा काफी मिला है मुझे।

अच्छा लगता है सुन कर कि किसी को तो अपना पैसा काफी लगता है। पर धीरे-धीरे बोलिए इनकमटैक्स वाले सुन न लें!

परवाह नहीं, मेरी सारी कमाई 'व्हाइट' में जो है, डरें वे जिनका काला पैसा हों! वैसे काफी ही कहना भी चाहिए न!

यहां कितने घंटे काम करते है?

सात-आठ घंटे।

इतने घंटे क्या करते हैं?

पढ़ता हूं, सोचता हूं और काम तो करता ही हूं।

इतना वक्त लगता है कार्टून बनाने में?

सोचने में ज्यादा वक्त लगता है। 3-4 घंटे! जब पहला आइडिया आये तो उसे कभी नहीं पकड़ना चाहिए, वह प्रलोभन होना है ताकि आप उसमें फंसे और खराब कार्टूनिस्ट बन जायें। बाद में हमेशा उससे बेहतर आइडिया आता है। नयी पीढ़ी के साथ यही गड़बड़ है। जो पहला आइडिया उनके मन आता है वे फौरन उसे बनाने बैठ जाते हैं और फटाफट अपना काम निबटा कर चलते बनते हैं। मैं कहता हूं कि दरअसल मैं बुरा कार्टूनिस्ट हूं, तभी तो मुझे इतना वक्त लगता है कार्टून बनाने में।

('धर्मयुग' से साभार)

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 46

Peter Pan of the Republic

Dileep Padgaonkar
Consulting Editor,
The Times of India

In the forty odd years that I knew R.K. Laxman I never ceased to marvel at the singular traits of his personality: boundless curiosity about the way the world spins, a penchant fordetecting an oddity in an individual, a place, an object, a situation, a bird or an animal, a zest for harmless mischief, a flair for mimicry and a rigorous discipline that he imposed on himself. All this taken together accounts - largely if not in full measure - for his prodigious output of cartoons and caricatures and their unprecedented appeal.

The appeal indeed cut across generations, party lines, ideological frontiers, across regions and communities and genders, across fads and fashions of the day.How did he pull this off? One reason, I reckon, is that Laxman deployed his gifts to expose the double-think and double-speak of the powerful and the influential with clarity and candour but without a shard of malice. That was his Laxmanrekha.

He depicted the ludicrous side of our nation's rulers with consummate aplomb. But never once did he offend their dignity. I can't recall any cartoon or caricature which carried the faintest whiff of prejudice against a religious community, a caste, a linguistic group, a gender. That quality endeared him to his readers. In their eyes he doubtless was the Peter Pan of our Republic.

Only once did he have to appear in court. One of his pocket cartoons in the Times of India had riled a Shiv Sena activist who proceeded to file a defamation suit against him, the editor(me) and the manager of the paper (Ram Tarneja) in a small town somewhere in the boondocks of Maharashtra. We had to travel for several hours in a particularly hot season to appear before a local magistrate to seek permission not to appear in person for subsequent court hearings. The proceedings lasted barely twenty minutes. What followed was a sight to behold: the judge, now

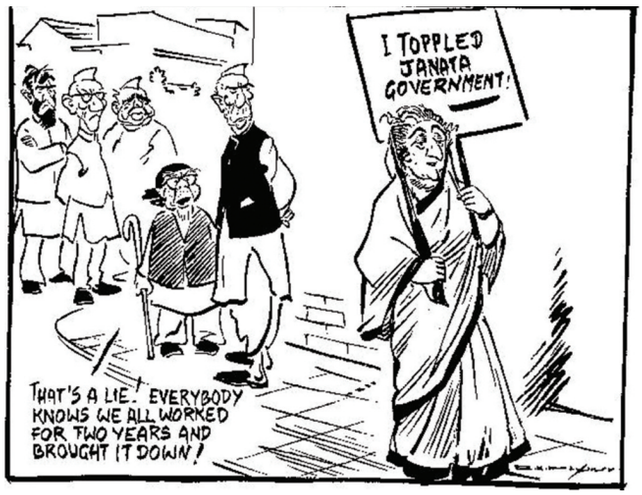

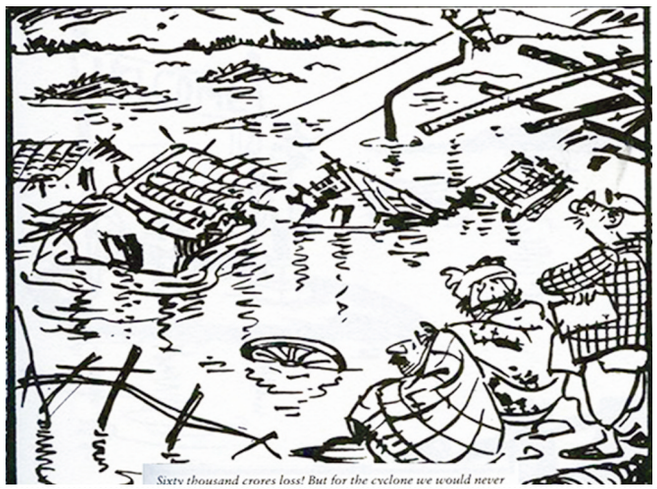

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 47

It is safer to sleep in the middle of the road than on the pavement these days.

bereft of his official apparel, and the complainant rushed to Laxman outside the court to request him to pose for a photograph with them!

It is in his pocket cartoons that Laxman kept a tab on the concerns of average citizens which he depicted with an unerring sense of topical relevance: corruption of politicians, procrastination of babus, potted roads, water and electricity shortages, traffic jams, life in slums, the conceits of sundry holy men and women. These have lost none of their sting even today. Laxman's Common Man represented 'civil society' long before the term gained currency – a 'civil society' that is bemused and bewildered and often quite helpless in the face of everyday problems that assail it from all sides.

The point to note is that unlike many of his peers in journalism Laxman avoided the pit-falls of partisan politics and the dust and grime of ideological battles. But none of this was tantamount to an amoral stand. Quite to the contrary. His loathed humbug and cant in public life. Consider the targets of his ire: self-styled holy men, over-righteous politicians, those who wore patriotism on their sleeve and those who resorted to moral policing to avenge 'hurt sentiments.' Yet one of his favourite past-times was to draw Lord Ganesha. This, I suspect, had little or nothing to do with a religious impulse. It had everything to do with the Lord's supremely contended demeanour.

Laxman was no unalloyed modernist either. Not for him the enchantment of avant-garde art and literature. He would wrinkle his nose at the sight of an abstract painting or sculpture. Nor had he any patience for sweeping intellectual arguments. What mattered to him was rugged commonsense – one that he sought to expresswith abiding simplicity, directness and grace.

It is these very virtues that he celebratedin whatever tickled his fancy including, above all,crows. He once asked me to hurry to his room to witness a spectacle on the road beneath his office window. Half-a-dozen crows stood in a queue at the edge of a puddle. Each one entered it, flapped its wings in the water and exited at the other end when the next one followed. With one eye-brow arched, he then pointed to a bus-stop where the passengers jostled for standing room. He didn't utter a word. But he said it all. Much like his Common Man did day after day for five decades and more.

Courtsy:Outlook

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 48

लक्ष्मण:सबसे अलग,सबसे बेहतर

कार्टूनिस्ट)
वरिष्ठ कार्टूनिस्ट

स्वर्गीय आर के लक्ष्मण,जिन्हें कार्टून जगत का दिलीप कुमार कहा जाये तो गलत न होगा। जहाँ उनसे पहले कोई भी कार्टूनिस्ट इतने बड़े कद का नहीं हुआ और न ही उनके बाद। इसलिए हमारे देश में कार्टून बनाना सीखने वाले किसी भी नवोदय कार्टूनिस्ट के लिए सबसे पहला कायदा आर के लक्ष्मण के कार्टूनों का बारीकी से अध्ययन होता है। दूसरे शब्दों में लक्ष्मण हर नए कार्टूनिस्ट की अलिखित पाठशाला होते हैं, जहाँ वह दाखिला लेता है। यह बात और है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ सभी अपनी अलग पहचान बना लेते हैं मैं भी उनमे से एक था।

बचपन में अपनी हज से लौटी नानी को लेने मुंबई गया था .सुबह -सुबह किसी लोकल जानकार को लेकर उनसे मिलने की ललक लिए टाइम्स ऑफ इण्डिया के दफ्तर पहुंचा। चूंकि बहुत सुबह थी इसलिए वहां मौजूद गार्ड ने बताया कि दोपहर में आइये और उनके पीए से मिलिए । लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वहां लक्ष्मण जी से मेरी मुलाकात नहीं हो सकी।

बाद में सन 1993 में बाबरी मस्जिद विध्वंस की पहली बरसी पर वह 'सहमत' के बुलावे पर उसमे भाग लेने दिल्ली आये थे। उसी दौरान मेरी उनसे पहली मुलाकात हुई । उन दिनों मैं 'नवभारत टाइम्स के साथ 'इकोनोमिक टाइम्स' में भी कार्टून बनाता था। मिलने पर मैंने उन्हें जैसे ही अपने बारे में बताया, उन्होंने मुझे झट से बगल में बैठा लिया । कुछ घंटे वह वहीं बैठे साक्षात्कार देते रहे। बीच-बीच में अपना पढने वाला चश्मा मुझे पकड़ा देते । उसे छू भर के मुझे बहुत गर्व होता था। वह वाकई में मेरे लिए एक यादगार दिन था। आइ बी एच पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित उनके कार्टून संग्रह 'यू सेडइट' के कई वोल्युम मेरे पास थे। लक्ष्मण के कार्टूनों की एक बड़ी खासियत यह थी कि वह अपने कार्टून के पात्रों के साथ जितनी मेहनत करते थे, उतनी ही उसके बैकग्राउंडमें रखी चीजों, इंसानों या जानवरों के साथ भी करते थे । बैकग्राउंड देखकर लगता था जैसे कोई फोटोग्राफ देख रहे हों। लक्ष्मण के कार्टून पूरी तरह से मेनुअली बनाये जाते थे । वह उनमे कही टेक्नीकल सपोर्ट इस्तेमाल नहीं करते थे . चाहे वह ब्लैक एंड व्हाइट कार्टून हों या रंगीन। उस समय भी उनके हाथों से बनाये कार्टून तकनीक के सहारे बनाये कार्टूनों से कई गुना बेहतर होते थे ।वह अपने पूरे कार्यकाल में ब्रश से कार्टून बनाते थे, जो एक बहुत कठिन कार्य था। मैंने भी 'नवभारत टाइम्स' में रहते हुए 1994 तकब्रश से ही कार्टून बनाये। लेकिन शायद लक्ष्मण जैसा संयम मुझमे नहीं था, सो मैंने भी फाउंटेन पेन,स्केच पेन और भी कई तरह के पेनों से कार्टून बनाना शुरू कर दिया। वह रोज के पॉकेट कार्टून के अलावा हफ्ते में पेज एक पर एक ही बॉक्स में तीन-चार कार्टूनों को एक ही फ्रेम में देते थे। मेरी जानकारी में इस तरह का यह दुनिया में पहला प्रयोग रहा होगा। हालाँकि कुछ विषय तो उस कार्टून के बनने की बारी आने तक बासी भी हो जाते थे। बावजूद इसके लोगों में उनका इंतजार रहता था। तभी तो लक्ष्मण ,लक्ष्मण थे .....सबसे अलग,सबसे बेहतर।

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 49

Courtesy : Social Media

Courtesy : DB Post

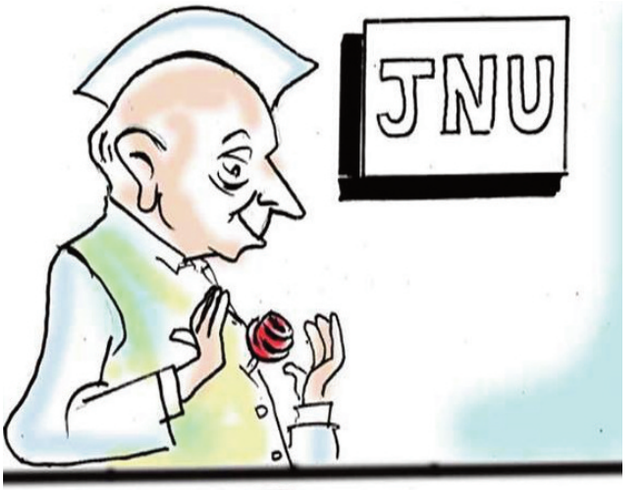

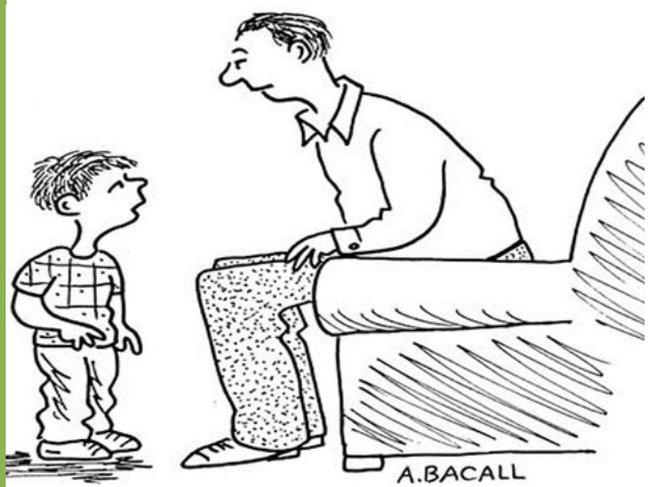

"You don't need to tell me about the birds and the bees. I downloaded it all from the Internet."

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 50

Gol Gappe

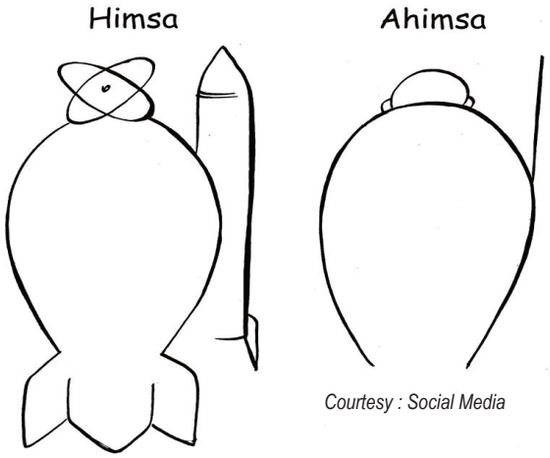

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : Patrika

Courtesy : Social Media

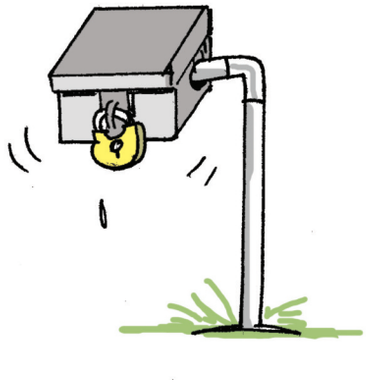

एक राष्ट्र
एक कर
1 NATION TAX MARKET
GST
GST
व्यवसायियों
को होने वाले लाभ
निर्माता सहित 75 लाख से कम वार्षिक विक्रय वालों को कम्पोजिशन की सुविधा।
एक देश, एक कर और एक बाजार। एक समान कर प्रणाली।
ऑनलाइन कर प्रणाली से होगी सहुलियत
कश्मीर से कन्याकुमारी तक चुंगी नाके समाप्त ।
रोजमर्रा की वस्तुएं होंगी सस्ती, उपभोक्ता की क्रय शक्ति में होगा इजाफा।
16 करों के स्थान पर सिर्फ एक जीएसटी
कर प्रक्रिया बेहद सरल, पारदर्शी एवं एकीकृत।
बाधारहित इनपुट टैक्स की सुविधा।
आम उपभोक्ता
को लाभ
निर्यात बढ़ने से नए उद्योग लगेंगे और युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा।
नकली वस्तुओं का क्रय-विक्रय समाप्त होगा।
उत्पादन की लागत कम होने से उपभोक्ताओं को होगा लाभ।
आम जनता को भी दोहरे कर से मिलेगी मुक्ति
कर प्रणाली का सीधा लाभ जनता को।
व्यवसायियों
से अपेक्षा
व्यवसायी पंजीयन की जानकारी जी.एस.टी.एन. में माइग्रेट कर जी.एस.टी. पंजीयन प्राप्त करें।
पंजीयन माइग्रेट ना करने पर व्यवसाय को नुकसान हो सकता है।
वाणिज्यिक कर कार्यालयों में संचालित हेल्प-डेस्क से सहयोग प्राप्त करें।
या फिर टोल फ्री नंबर 1800-2335-382 पर कॉल करें।
वैट की अंतिम 2 रिटर्न फाइल करने पर आई.टी.सी. का लाभ।
Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़
MAKE IN INDIA
Digital India
छत्तीसगढ़
जनसंपर्क

FEB 2018 TM_Layout 1 3/9/2018 3:16 PM Page 52

RNI No-DELBIL/2014/56498
BOOK POST LIC NO.-DL(E)-20/5492/2016-18
9th & 10th of every month

सेल SAIL

सेल टीएमटी

पसंद
आर्किटेक्टस् की

विश्वास
उपभोक्ताओं का

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
www.sail.co.in
हर किसी कि जिन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल

सेल एकीकृत इस्पात संयंत्रों के उत्पाद : अपने करीबी क्षेत्रीय कार्यालय से सम्पर्क करें

क्षेत्रीय कार्यालय

उत्तरी क्षेत्रः
17वीं मंज़िल, उत्तरी टावर, कोर-1, स्कोप मिनार, लक्ष्मी नगर जिला केंद्र, दिल्ली–110 092.
ई-मेलः rmfpnr@sail-steel.com
rmlpnr@sail-steel.com
rmretailnr@sail-steel.com
फोनः 011-22441825
011-22442105, 011-22444572

पूर्वी क्षेत्रः
इस्पात भवन
40, जवाहरलाल नेहरू रोड कोलकाता–700 071.
ई-मेलः rmfper@sail-steel.com
rmlper@sail-steel.com
rmretailer@sail-steel.com
फोनः 033-22880634
033-22882986, 033-22886423

पश्चिमी क्षेत्रः
दि मेट्रोपॉलिटन
8वीं व 9वीं मंज़िल बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व) मुम्बई-400 051.
ई-मेलः rmfpwr@sail-steel.com
rmlpwr@sail-steel.com
rmretailwr@sail-steel.com
फोनः 022-26571827
022-26571836, 022-26571838

दक्षिणी क्षेत्रः
इस्पात भवन
5 कोडमबक्कम हाई रोड
चेन्नई-600 034.
ई-मेलः rmlpsr@sail-steel.com
rmfpsr@sail-steel.com
rmretailsr@sail-steel.com
फोनः 044-28259660
044-28257164, 044-28285009